RESILIENT ADAPTABLE SUSTAINABLE
FOREST ECOSYSTEM CLIMATE PROOFING PROJECT
HIMACHAL PRADESH

वानिकी परियोजनाएं

वन संरक्षण, आजीविका सुधार और एकीकृत विकास

हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना की प्रस्तुति

FOLLOW US ON: **JICA HP FORESTRY PROJECT**

प्रकाशकः

जाइका वानिकी परियोजना
मुख्य कार्यालय परियोजना प्रबंधन इकाई
टुटू, शिमला-11

प्रकाशन वर्षः मार्च 2026

मार्गदर्शनः

डा. संजय सूद (भा.व.से)
वन बल प्रमुख एवं मुख्य परियोजना निदेशक
जाइका वानिकी परियोजना।

श्री श्रेष्ठा नंद (हि.प्र.व.से)
परियोजना निदेशक
जाइका वानिकी परियोजना।

लेखक एवं संपादकः

श्री आरपी नेगी, मीडिया स्पेशलिस्ट
जाइका वानिकी परियोजना।

आभारः

जाइका वानिकी परियोजना, केएफडब्ल्यू और आईडीपी परियोजना प्रबंधन हिमाचल प्रदेश।

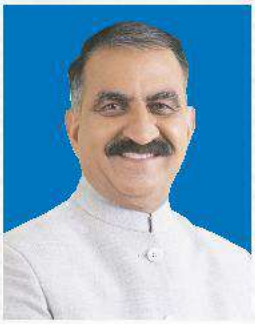

हिमाचल प्रदेश सरकार

ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू
मुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि हिमाचल प्रदेश वन विभाग के अन्तर्गत प्रदेश में कार्यान्वित तीन बाह्य वित्त पोषित परियोजनाओं की गतिविधियों पर एक पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है।

हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्य में इन वानिकी परियोजनाओं का हरित आवरण को बढ़ाने के साथ-साथ ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान है। इन परियोजनाओं से वन एवं पर्यावरण संरक्षण, आजीविका सुधार, एकीकृत विकास और लोगों को स्वरोजगार के अवसर मिल रहे हैं, जिससे लोगों का सामाजिक-आर्थिक विकास सुनिश्चित हुआ है।

प्रदेश में कार्यान्वित जापान इंटरनेशनल को-ऑपरेशन एजेंसी द्वारा वित्तपोषित 800 करोड़ की जाइका वानिकी परियोजना, जर्मनी द्वारा वित्तपोषित 304 करोड़ की केएफडब्ल्यू परियोजना और विश्व बैंक की सहायता से 700 करोड़ की आईडीपी परियोजना के माध्यम से राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में हुए विकास कार्यों से लाभान्वित होकर लोगों के जीवन स्तर में आशातीत बदलाव आ रहे हैं।

मैं आशा करता हूं कि पुस्तिका में इन परियोजनाओं के तहत चलाए जा रहे विभिन्न कार्यो एवं गतिविधियों का समावेश किया जाएगा, जिससे और अधिक लोग इन परियोजनाओं के कार्यक्रमों का लाभ उठाने के लिए प्रेरित होंगे।

पुस्तिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

सुखविन्द्र सिंह

(सुखविन्द्र सिंह सुक्खू)

कमलेश कुमार पंत (भा.प्र.से)
अतिरिक्त मुख्य सचिव वन हिमाचल प्रदेश।

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि वन विभाग हिमाचल प्रदेश के अंतर्गत चल रही बाह्य वित्त पोषित तीन महत्वाकांक्षी परियोजनाओं की गतिविधियों पर आधारित पुस्तिका जाइका वानिकी परियोजना द्वारा प्रकाशित की जा रही है। इन परियोजनाओं में मुख्य रूप से 800 करोड़ की जाइका वानिकी परियोजना, 700 करोड़ की लागत से आईडीपी और 310 करोड़ की लागत से केएफडब्ल्यू शामिल हैं।

हिमाचल प्रदेश के हरित आवरण में वृद्धि के साथ-साथ वनों पर आश्रित ग्रामीण समुदायों की आर्थिकी में सुधार पर केंद्रित जाइका वानिकी परियोजना और केएफडब्ल्यू परियोजना अनेक मायनों में अभूतपूर्व है। जाइका वानिकी परियोजना के तहत जुड़े सभी स्वयं सहायता समूहों को आजीविका कमाने का पूरा मौका मिल रहा है। इसके साथ-साथ परियोजना के लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में बेहतर परिणाम सामने आ रहे हैं। जनहित में परियोजना के ऐसे सभी प्रयास काफी सराहनीय है। वहीं आईडीपी प्रोजेक्ट हिमाचल प्रदेश के चयनित ग्राम पंचायतों में ऊपरी जलागम (वाटरशेड) प्रबंधन में सुधार कर रही है।

इसके साथ-साथ यह परियोजना कृषि जल उत्पादकता बढ़ाना और जल संसाधनों का बेहतर उपयोग सुनिश्चित करवा रही है। ऐसे बेहतरीन कार्यों के लिए मैं तीनों परियोजना प्रबंधनों को बधाई देता हूँ।

धन्यवाद।

(कमलेश कुमार पंत)

डा. संजय सूद (भा.व.से)
वन बल प्रमुख एवं मुख्य परियोजना निदेशक
जाइका वानिकी परियोजना

प्रस्तावना

पहाड़ी राज्य हिमाचल प्रदेश में बाह्य सहायता वित्तपोषित परियोजनाएं मील का पत्थर साबित हो रही है। वन विभाग के अंतर्गत राज्य में 1804 करोड़ के तीन महत्वपूर्ण परियोजनाएं चल रही हैं, जिनके माध्यम से आत्मनिर्भता से आजीविका सुधार का नया दौर भी शुरू हुआ।

जापान इंटरनेशनल को-ऑपरेशन एजेंसी द्वारा वित्तपोषित 800 करोड़ की जाइका वानिकी परियोजना, जर्मनी द्वारा वित्तपोषित 304 करोड़ की केएफडब्ल्यू परियोजना और विश्व बैंक की सहायता से 700 करोड़ की आईडीपी परियोजना के माध्यम से राज्य के 10 जिलों की 428 पंचायतों में विकास कार्य हुए।

केएफडब्ल्यू और आईडीपी परियोजना की अवधि मार्च 2026 तक है, लेकिन जाइका वानिकी परियोजना मार्च 2028 तक चलेगी। वन विभाग के अंतर्गत चल रही इन तीनों परियोजनाओं में राज्य के सैंकड़ों बेरोजगारों को रोजगार के अवसर मिले और ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को स्वरोजगार के द्वार भी खुले। जाइका वानिकी परियोजना द्वारा प्रकाशित की जा रही इस पुस्तक के माध्यम से वन विभाग की तीन महत्वाकांक्षी परियोजनाओं के बहतरीन कार्य, सफलता की कहानी और इन परियोजनाओं को अगले चरण की मंजूरी की उम्मीदों के साथ उल्लेख किया गया है।

मैं तीनों परियोजना प्रबंधनों की टीम को सराहनीय कार्यों के लिए बधाई देता हूं।

जय हिंद, जय हिमाचल।

(डा. संजय सूद)

प्राक्कथन

आर. लालनन संगा (भा.व.से)

प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं
मुख्य परियोजना निदेशक आईडीपी

हिमाचल प्रदेश वन विभाग के अंतर्गत विश्व बैंक की सहायता से 700 करोड़ की आईडीपी परियोजना मार्च 2020 में शुरू हुई और मार्च 2026 में इसकी अवधि समाप्त हो गई। इस परियोजना के अंतर्गत राज्य के 10 जिलों की 428 पंचायतों में एकीकृत विकास के अवसर मिले। परियोजना ने 6 वर्ष के अंतराल में राज्य के दूरदराज और ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे विकास कार्य किए, जो अपने आप में सफलता की कहानी बयां करती है।

राज्य के कई ऐसे दूरदराज क्षेत्र हैं जहां पर कभी किसान सिंचाई के लिए पानी को तरसते थे, मगर आईडीपी परियोजना के आने से 428 पंचायतों की बंजर जमीन पर हरियाली भी लौटने लगी। मेरा मानना है कि इस तरह की परियोजनाएं दूसरे चरण में भी शुरू हो, ताकि हिमाचल के ग्रामीण क्षेत्रों में एकीकृत विकास की और कहानी लिख सके।

मैं जाइका वानिकी परियोजना द्वारा प्रकाशित की जा रही इस पुस्तक के लिए परियोजना प्रबंधन को बधाई देता हूं।

जय हिंद।

उपासना पटियाल (भा.व.से)

अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं
मुख्य परियोजना निदेशक केएफडब्ल्यू

हिमाचल प्रदेश वन विभाग के अंतर्गत धर्मशाला में संचालित HPFECPP (KfW)परियोजना, हिमालयी वन पारिस्थितिकी तंत्र एवं ग्रामीण समुदायों को जलवायु परिवर्तन के प्रति अधिक सुदृढ़ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

कांगड़ा एवं चंबा जिलों के 9 वन मंडलों में लागू इस परियोजना के माध्यम से वन एवं पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में सराहनीय कार्य हुए हैं।

यह परियोजना 2016 में शुरू हुई और इसकी अवधि मार्च 2026 तक है। यह 310 करोड़ की जर्मन-सहायता प्राप्त परियोजना है, जो जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने, जैव विविधता बढ़ाने और वनों पर आधारित आजीविका को बेहतर बनाने पर केंद्रित है। जाइका वानिकी परियोजना की ओर से प्रकाशित की जा रही इस पुस्तक के माध्यम से प्रदेश की जनता को केएफडब्ल्यू परियोजना की सफल कहानी पढ़ने के सुअवसर मिलेंगे। इसके लिए मैं जाइका वानिकी परियोजना की पूरी टीम को बधाई देती हूं।

जय हिंद, जय हिमाचल।

वन संरक्षण, आजीविका सुधार और विकास के पथ पर वानिकी परियोजना

जाइका वानिकी परियोजना हिमाचल में वन तंत्र प्रबंधन, सामुदायिक विकास एवं आजीविका सुधार के लिए कार्य कर रही है। इस परियोजना की कुल लागत 800 करोड़ रुपये है और अवधि 10 वर्ष यानी 2018-19 से 2027-28 तक है। जाइका वानिकी परियोजना का मुख्य लक्ष्य हिमाचल प्रदेश में सतत् सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए वन क्षेत्रों द्वारा पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं में सुधार किया जा रहा है। वर्ष 2022 में जिला कांगड़ा को भी इस परियोजना में शामिल किया गया। अब यह परियोजना हिमाचल प्रदेश के 7 जिलों किन्नौर, शिमला, बिलासपुर, मंडी, कुल्लू, लाहौल-स्पीति और कांगड़ा के 9 वन वृतों, 22 वन मंडलों, 72 वन परिक्षेत्रों में कार्यान्वित की जा रही है। हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना में 460 माइक्रो प्लान व 920 स्वयं सहायता समूहों की आजीविका बढ़ाने के लिए प्लान तैयार किए जा रहे हैं। वनों में हरित आवरण बढ़ाने के लिए परियोजना द्वारा पौधरोपण किया जा रहा है। जाइका वित्त पोषित हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना के तहत राज्य में लोगों के माध्यम से परियोजना का कार्यान्वयन हो रहा है।

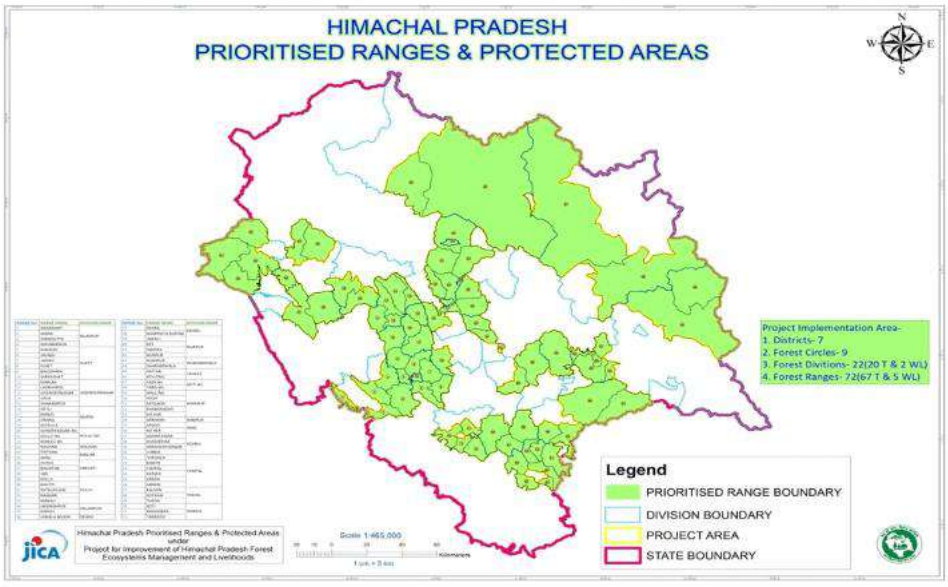

मशरूम की खेती, पत्तल का कारोबार, हथकरघा एवं बुनकर,सिलाई-कटाई और मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण, ऑर्गेनिक प्रोडक्ट्स को बढ़ावा देना, ग्रामीण क्षेत्रों में प्राकृतिक जल स्रोतों का संरक्षण करने सहित कई गतिविधियां चल रही हैं। इसके साथ-साथ जाइका वानिकी परियोजना द्वारा अपनी ही नर्सरी में तैयार हुए पौधों को सामुदायिक तौर पर पौधरोपण भी सर्वोच्च प्राथमिकता है। परियोजना के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं की आर्थिकी में निरंतर सुधार करने के प्रसास किए जा रहे हैं। आजीविका सुधार क्षेत्र में 24 मॉडल पर कार्य चल रहे हैं। इस क्षेत्र में आजीविका कमाने के लिए स्वयं सहायता समूहों को प्रशिक्षण दिए जा रहे हैं। कैपिटल कॉस्ट के तौर पर 75 प्रतिशत का बजट जाइका की ओर से दिए जाते हैं, जबकि 25 प्रतिशत स्वयं सहायता समूहों को स्वयं व्यय करना पड़ता है। विभिन्न स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार किए गए उत्पादों को भी अच्छी कीमत मिल रही है।

जाइका वानिकी परियोजना का संक्षिप्त विवरणः

हिमाचल प्रदेश सम्पूर्ण लक्ष्यः

हिमाचल प्रदेश के चयनित क्षेत्रों में वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं संवर्धन करना, जिससे पर्यावरण एवं सतत् सामाजिक-आर्थिक विकास में योगदान मिल सके।

परियोजना कार्यान्वयन क्षेत्रः

यह परियोजना हिमाचल प्रदेश के 7 जिलों बिलासपुर, कांगड़ा, किन्नौर, मंडी, लाहौल-स्पीति, शिमला और कुल्लू के 9 वृतों, 22 वन मंडलों और 72 वन परिक्षेत्रों में कार्यान्वित की जा रही है। यह परियोजना हिमाचल प्रदेश वन विभाग के सौजन्य से गठित ग्राम वन विकास समितियों और जैव विविधता प्रबंधन समितियों के माध्यम से हिमाचल प्रदेश सोसायटी अधिनियम-2006 के तहत पंजीकृत एक स्वायत्त सोसाइटी द्वारा कार्यान्वित की जा रही है, जिसका नाम हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना के रूप में नामित किया गया।

परियोजना की लागत एवं अवधिः

इस परियोजना की कुल लागत 800 करोड़ रुपये है और अवधि 10 वर्ष यानी 2018 से 2028 तक है।

परियोजना का ध्येयः

परियोजना क्षेत्र में वन पारितंत्रों का सुनियोजित कार्य-कलापों द्वारा बेहतर प्रबंधन प्रदान करना, जिससे कि वनों में वृद्धि हो, जैव विविधता का संरक्षण होए समुदायों की आजीविका में सुधार एवं संस्थागत क्षमता का सुदृढ़िकरण हो।

परियोजना के घटकः

- सतत् वन पारिस्थिति तंत्र प्रबंधन।
- जैव विविधता संरक्षण।
- आजीविका सुधार सहयोग।
- संस्थागत क्षमता सुदृढिकरण।

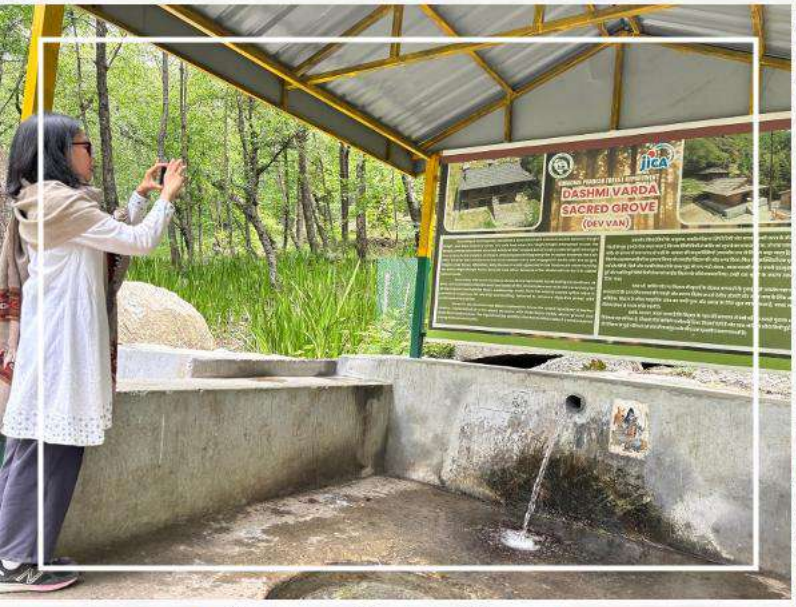

परियोजना की मुख्य गतिविधियाः

- 458 ग्राम वन विकास समितियां और जैव विविधता प्रबंधन उप समितियों का चयन एवं उनका गठन किया गया।
- 458 सूक्ष्म विकास योजनाएं तैयार की गई।
- 919 स्वयं सहायता समूह गठित किए गए, जिनमें से 700 से अधिक स्वयं सहायता समूह पूर्ण रूप से महिला संचालित हैं।
- परियोजना द्वारा स्वयं सहायता समूहों को अनुदान के रूप में 1-1 लाख रुपये की राशि अपनी आजीविका संवर्धन कार्यों को गति देने के लिए दी गई।
- स्वयं सहायता समूहों द्वारा अपने व्यावसाय के सुनियोजित तरीके से चलाने के लिए परियोजना के सौजन्य से 885 व्यावसायिक योजनाएं तैयार की गई।
- ग्राम वन विकास समितियों और जैव विविधता प्रबंधन समितियों के लिए परियोजना जागरुकता कार्यशालाएं, कौशल आधारित प्रशिक्षण समय-समय पर आयोजित किए जाते हैं। अब तक 800 से अधिक स्वयं सहायता समूहों को कौशल आधारित गतिविधियों में प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
- ग्राम वन विकास समितियों और जैव विविधता प्रबंधन समितियों के माध्यम से परियोजना द्वारा सहभागी वन प्रबंधन एवं विभागीय स्तर पर अब तक 8300 हेक्टेयर क्षेत्र में पौधरोपण किया गया।
- मुख्यमंत्री वन विस्तार योजना के अंतर्गत प्रदेश में 124 हेक्टेयर क्षेत्र में पौधरोपण किया गया।
- पौधशाला विकास योजना के तहत परियोजना द्वारा 72 विभागीय पौधशालाओं का सुदृढीकरण किया गया है।
- चौपाल वन मंडल में परियोजना द्वारा अत्याधुनिक तकनीक से लैस नर्सरी संचालित की गई है, जिससे पौधरोपण एवं संरक्षण का कार्य वैज्ञानिक यांत्रिक तकनीक से किया जा रहा है।
- जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ द्वारा राज्य के परियोजना क्षेत्रों में औषधीय पौधों की व्यावसायिक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- स्पीति के अतिदुर्गम क्षेत्र देमुल गांव को जौ की थ्रेशिंग के लिए पायलट आधार पर डीजल संचालित दो थ्रेशिंग मशीनें वितरित की गई।

जाइका वानिकी परियोजना द्वारा वन विभाग की नर्सरियों का आधुनिकीकरण

जाइका वानिकी परियोजना की नर्सरी से हिमाचल में हरियाली की पौधशाला चल रही है। परियोजना द्वारा प्रदेश में वन विभाग की नर्सरियों का आधुनिकीकरण हो रहा है। ताकी प्रदेश में गुणवत्तायुक्त पौधे तैयार कर उसे बेहतर तरीके से रोपा जा सके। जाइका के अंतर्गत प्रदेश में 66 रेंज और 6 सर्कल स्तर पर विकसित नर्सरियों में 55 से अधिक पेड़ों की प्रजातियों के पौधे तैयार किए जा रहे हैं। चिलगोजा, छरमा, देवदार, बान, तोष समेत 55 पेड़ों की प्रजातियों वाले पौधे इन नर्सरियों में उपलब्ध हैं। जाइका

प्रोजेक्ट के माध्यम से इन नर्सरियों की क्षमता में लगभग 80 लाख पौधे की बढ़ोतरी की गई है। इवर्ष 2025 में लगभग 44 लाख पौधे तैयार किए गए हैं। प्रदेश के हर जलवायु में रोपने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले पौधे तैयार किए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त उक्त सभी नर्सरियों में पानी की बेहतर सुविधाएं, केचुआ खाद, ग्रीन हाउस, इंटरलिंक चेन, फेंसिंग इत्यादी की सुविधा भी परियोजना से प्रदान की गई है ताकी गुणवत्तापूर्ण पौधे नर्सरियों में तैयार हो सके। हिमाचल प्रदेश में पहली बार छरमा की नर्सरी तैयार करने में जाइका परियोजना का सबसे बड़ी भूमिका रही। जिला लाहौल-स्पीति में तैयार होने वाले छरमा एक औषधीय गुण वाला पौधा है। जिसकी नर्सरी वाइल्ड लाइफ स्पीति व लाहौल के सीसू में तैयार की गई है। इसके अलावा सीसू और शैगो नर्सरी में भी छरमा के पौधे तैयार किए जा रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ चिलगोजा के पौधे जिला किन्नौर की छोल्टू नर्सरी में तैयार किए जा रहे हैं। जाइका परियोजना हिमाचल को हरित राज्य बनाने की परिकल्पना को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। जाइका वाणिकी परियोजना के तहत विशेष रूप से औषधीय पौधों के निरंतर विकास को विनियमित किया जा रहा है।

परियोजना के तहत विभिन्न सेल्फ हेल्प ग्रुप में क्लस्टर स्तर पर हिम जड़ी-बूटियां जिनका चिकित्सकीय क्षेत्र में महत्व है, से संबंधित करीब 643 प्रजातियां हैं। इनमें से व्यावसायिक महत्व की कुछ प्राथमिकता वाली प्रजातियों का चयन करके वन एवं निजी भूमि पर उनकी खेती की जा रही है। जिनमें मुख्यतः सतावरी, एलोवेरा, तेज पत्ता, कडू, चिरायता इत्यादी हैं। जड़ी-बूटी सैल द्वारा पिक्रोराईजा कुरुआ यानी कुटकी, स्वर्शिया कॉर्डेटा यानी चिरायता, हरड़, आंवला, रीठा, मोरिंगा व टौर के पत्तों की प्लेट बनाना, चीड़ के पत्तियों का संग्रहण, पेरिस पॉलीफिया यानी सतुआ के प्रसार के लिए प्रकंद और एसपेरेगस रेसमोसस यानी शतावरी की व्यावसायिक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है।

जनसहभागिता व विभागीय स्तर पर पौधरोपण

हिमाचल प्रदेश में वन विभाग और पीएफएम सहभागी वन प्रबंधन के अंतर्गत हर साल पौधरोपण किया जाता है। अब तक प्रदेश में लगभग 8 हजार 3 सौ हेक्टेयर भूमि पर पौधरोपण किया जा चुका है। हिमाचल में हरित आवरण को वर्ष 2030 तक 30 प्रतिशत बढ़ाने के लिए जाइका वानिकी परियोजना का अहम भूमिका निभा रही है।

परियोजना में स्वयं सहायता समूहों के बढ़ते कदम

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत 400 ग्राम विकास समितियां और 60 जैव विविधता समितियां हैं। इनके अंतर्गत 920 स्वयं सहायता समूहों द्वारा आजीविका कमाने के लिए उनके कदम बढ़ते जा रहे हैं। स्वयं सहायता समूहों से जुड़े लोग मशरूम की खेती, आचार-चटनी तैयार करना, पत्तल व्यवसाय, वर्मिकम्पोस्ट और हैंडलूम सेक्टर में कार्य कर रहे हैं।

मशरूम की खेती से आजीविका में सुधार

जाइका वानिकी परियोजना से जुड़े विभिन्न स्वयं सहायता समूहों द्वारा मशरूम की खेती की जा रही है। बटन मशरूम के उत्पादन में सेल्फ हेल्प ग्रुप से जुड़ी महिला सदस्यों के लिए तकनीकी सहायता प्रदान की गई। जिस वजह से 25 दिनों के बाद बटन मशरूम का उत्पादन शुरू हुआ और एक हफ्ते में ग्रुप ने 200 किलोग्राम मशरूम तैयार किया। जो 110 से 130 रुपये प्रतिकिलोग्राम की कीमत पर मिल रहा है। इस बिजनेस में समूह की यह पहली सफलता थी। इसके लिए उन्हें पहले औपचारिक रूप से प्रशिक्षित नहीं किया गया था। महिलाओं के इस समूह द्वारा मशरूम उगाने का परीक्षण सफल रहा है। इसके लिए ग्रुप को 1 लाख रुपए मदद राशि दी गई। महिलाओं को गांव में ही तकनीकी प्रशिक्षण परियोजना के माध्यम से दिया गया। ढींगरी और शिटाके मशरूम की प्रजातियों की ज्यादा मांग है। इसको ध्यान में रखते हुए समूह में मशरूम उगाने में विविधता लाने के प्रयास जारी है।

पर्यावरण संरक्षण के साथ पत्तल का कारोबार

जाइका वानिकी परियोजना न सिर्फ ग्रामीण महिलाओं के लिए आर्थिकी का एक साधन बन रही हैं, बल्कि उनके पारंपरिक कार्यों को आधुनिक तरीकों से करवाकर आय को बढ़ाने का काम भी करती हुई नजर आ रही है। विभिन्न स्वयं सहायता समूहों के तहत बहुत सी महिलाएं पीढ़ी दर पीढ़ी टौर के पत्तों की पत्तलें बनाने का पारंपरिक कार्य करती आ रही हैं, लेकिन जाइका वानिकी परियोजना ने अब इनके आधुनिकता के साथ करवाने का कार्य शुरू किया है। परियोजना के तहत वन मंडल स्तर पर कुछ स्थानों पर स्वयं सहायता समूहों को पत्तलें बनाने की मशीन उपलब्ध करवाई गई है। अब महिलाएं इस मशीन के माध्यम से पत्तलें बना रही हैं। प्रदेश में आधुनिक तरीके से बन रही पत्तलों की मांग भी काफी बढ़ रही है। टौर के पत्तों से बनी पत्तलें पूरी तरह से बायोडिग्रेडेबल हैं, जिनसे पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं पहुंचता।

हैंडलूम सेक्टर के उत्पादों को मिल रही बेहतर पहचान

जाइका वानिकी परियोजना हैंडलूम सेक्टर में बेहतरीन कार्य कर रही है। जाइका से जुड़े विभिन्न स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से तैयार हो रहे हथकरघा एवं बुनकर उत्पादों को नई पहचान मिल रही है। कुल्लू जिले में 106 स्वयं सहायता समूह हैंडलूम सेक्टर से जुड़ हैं, जिनमें 72 ग्रुप एक्टिव तरीके से काम कर रहे हैं। यह परियोजना विभिन्न स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार किए गए उत्पादों की ब्रांडिंग के लिए का कर रही है। हिम ट्रेडिशन नामक ब्रांड से उत्पादों की ब्रिकी की जाती है।

चीड़ की पत्तियों से उत्पाद, जंगलों में आग से भी बचाव

जंगल में सूखी बेकार मानी जाने वाली चीड़ की पत्तियां अब लोगों की आय का साधन बन गई हैं। जाइका वानिकी परियोजना से जुड़े स्वयं सहायता समूह इनसे विभिन्न तरह के घरेलू उत्पाद तैयार कर रहे हैं। चीड़ की पत्तियों के उत्पाद तैयार कर बेचना भी शुरू कर दिया है। चीड़ की पत्तियों से ब्रिक्केट्स बनाकर ईंधन तैयार करने के लिए लोगों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है और इसमें उपयोग होने वाले उपकरण निशुल्क दिया जा रहा है। चीड़ की पत्तियां अब बेकार न होकर इनकी उपयोगिता बढ़ गई है। जंगलों में चीड़ की सूखी पत्तियों से अग्निकांड की घटनाओं में भी कमी आएगी। घरों में तैयार सीरा-बड़ियों की मांग जाइका वानिकी परियोजना के माध्यम से प्रदेश की ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं। परियोजना के सहयोग से मंडी वन मंडल में स्वयं सहायता समूह को बड़ियां व सीरा तैयार करने की ग्राइंडिंग मशीनें दी गई। महिलाओं को उनके घरों के अंदर ही निर्मित बड़ियों व सेपु बड़ियों की काफी मांग रहती है

मार्केटिंग आउटलैट्स में बिक रहे पारंपरिक उत्पाद

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत जुड़े विभिन्न स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार उत्पादों को बेचने के लिए परियोजना के अंतर्गत 22 वन मंडलों में मार्केटिंग आउटलैट्स स्थापित किए जा रहे हैं। परियोजना ने 25 आउटलैट्स खोलने का लक्ष्य रखा है। जिसमें से 19 आउटलैट्स संचालित हो चुके हैं, जबकि 6 आउटलैट्स निर्माणाधीन हैं। बता दें कि इससे परियोजना के अंतर्गत तैयार उत्पादों की मार्केटिंग भी हो रही है और लोग तरह-तरह के उत्पाद इन आउटलैट्स से खरीद रहे हैं। इन आउटलेट्स में रसायन मुक्त एवं पारंपरिक उत्पाद बेचे जा रहे हैं।

औषधीय एवं विलुप्त होते पौधों की ओर रुझान

हिमाचल प्रदेश में औषधीय पौधों की खेती के लिए जाइका वानिकी परियोजना ने सकारात्मक कदम उठाया है। परियोजना के जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ के अंतर्गत, किन्नौर, रोहड़ू, चैपाल और सुकेत में औषधीय पौधों की बेहतरीन खेती की जा रही है।

इसके अलावा विलुप्त हो रहे बोझ पत्र को जिंदा करने की दृष्टि से परियोजना ने महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इस बार के मॉनसून सीजन के दौरान जिला किन्नौर के तरांडा, निगुलसरी और जानी में बोझ पत्र के 1500 पौधे रोपे गए।

एलोवेरा खेती से सोना उगलने लगे बंजर खेत

सुकेत और कांगू रेंज के तीन स्थानों में रोपे गए हैं 25-25 हजार एलोवेरा के पौधे

हमीरपुर की निजी कंपनी के बीच एलोवेरा उत्पादों की खरीद के लिए हुआ है समझौता ज्ञापन

दो साल बाद मिला मेहनत का फल

नौणी विश्वविद्यालय में राज्य वन विभाग के सहयोग से इंटरएक्टिव बैठक आयोजित

बैठक

विलुप्त हो रहे औषधीय और सुगंधित पौधों पर मंथन

वैज्ञानिक, शोधार्थियों, वन अधिकारियों समेत प्रगतिशील किसानों ने लिया भाग

32 औषधीय एवं सुगंधित पौधों पर चल रहा शोध

किसान सम्मानित

मॉडल नर्सरी पियुंत्रा से हरित क्रांति की पाठशाला

- प्रदेश की पहली अत्याधुनिक तकनीक से लैस है यह पौधशाला
- विभिन्न प्रजातियों के 6 लाख पौधों की क्षमता हैं इस नर्सरी में

हिमाचल प्रदेश के 22 वन मंडलों के अंतर्गत 66 वन परिक्षेत्रों में जाइका वानिकी परियोजना के तहत उत्कृष्ट नर्सरियां संचालित की जा रही हैं। ये नर्सरियां हरियाली की पाठशालाएं बनकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश फैला रही हैं। इनमें जिला शिमला के चैपाल वन मंडल के अंतर्गत नेरवा वन परिक्षेत्र की 'मॉडल नर्सरी पियुंत्रा' मील का पत्थर बन चुकी है। यानी इस मॉडल नर्सरी से हरित क्रांति की पाठशाला चल रही है। यह नर्सरी राज्य की पहली अत्याधुनिक तकनीक से सुसज्जित नर्सरी है। पियुंत्रा मॉडल वन नर्सरी कैदी, चैपाल में दो हेक्टेयर भूमि पर विकसित की गई है। हालांकि पियुंत्रा नर्सरी की स्थापना वर्ष 1972 में हुई थी, लेकिन वर्ष 2018 में जाइका वानिकी परियोजना ने इसे अत्याधुनिक तकनीक से संचालित करने का काम शुरू किया। वर्तमान में यह नर्सरी छह लाख से अधिक पौधों की क्षमता के साथ संचालित हो रही है।

11 प्रजातियों के पौधे हैं उपलब्ध

इस नर्सरी में कुल 11 प्रजातियों के पौधे उगाए जा रहे हैं, जिनमें मुख्य रूप से देवदार, बाण, चुल्ली, बकायन, रीठा, बैमी, कचनार, कैंथ, अनार, बयूल और आंवला शामिल हैं। इसी नर्सरी ने वन मंडल चैपाल समेत राज्य के अन्य क्षेत्रों के लिए भी पौधों की स्पलाई की जाती हैं।

तकनीक से लैस, दक्षता में आगे

जाइका वानिकी परियोजना द्वारा पियुंत्रा नर्सरी के रखरखाव के लिए अत्याधुनिक तकनीकों का भरपूर उपयोग किया जा रहा है। यहां एक मौसम केंद्र और फसल ऐप के माध्यम से पॉलीबैग में लगे पौधों की नमी और सूखापन आदि की जानकारी प्राप्त की जाती है। नर्सरी में पूरी तरह ऑटोमैटिक सिंचाई प्रणाली स्थापित है, जिससे एक बटन दबाते ही पूरे नर्सरी क्षेत्र में आवश्यकता अनुसार पानी दिया जा सकता है। इससे कर्मचारियों का समय बचता है और कार्य कुशलता बढ़ती है। यहां आधुनिक तकनीक से निर्मित कुल छह पॉलीहाउस हैं, साथ ही 80 हजार लीटर क्षमता का जल टैंक भी सिंचाई व्यवस्था के लिए स्थापित किया गया है।

"पियुंत्रा नर्सरी प्रदेश की ऐसी मॉडल नर्सरी है, जो अत्याधुनिक तकनीक से लैस है। इसकी स्थापना वर्ष 1972 में हुई थी, वर्ष 2018 से जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत संचालित की जा रही है। यहां विभिन्न प्रजातियों के 6 लाख से अधिक पौधों की क्षमता है। वन विभाग की अन्य नर्सरियों के लिए पियुंत्रा नर्सरी अपने आप में एक बेहतरीन उदाहरण है"

श्री जंगवीर सिंह दुल्टा
वन मंडलाधिकारी चौपाल।

हरित क्रांति की ओर जाइका वानिकी परियोजना के बढ़ते कदम

- वित्त वर्ष 2020 से 2025 तक रोपे 8300 हेक्टेयर भूमि पर पौधे
- मुख्यमंत्री वन विस्तार योजना के अंतर्गत 124 हेक्टेयर जमीन पर रोपे पौधे

हिमाचल प्रदेश में हरित आवरण बढ़ाने के लिए जाइका वानिकी परियोजना के कदम हर साल बढ़ते जा रहे हैं। राज्य में हरित आवरण बढ़ाने के लिए परियोजना 22 वन मंडलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके मद्देनजर हर वर्ष भिन्न-भिन्न प्रजातियों के पौधे रोपे जा रहे हैं। वित्त वर्ष 2020-21 से लेकर वित्त वर्ष 2024-25 तक 8 हजार 3 सौ हेक्टेयर भूमि पर सफलता पूर्वक पौधरोपण किया गया। जिसका सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहा है।

उल्लेखनीय है कि जाइका वानिकी परियोजना द्वारा राज्य के सात जिलों के 22 वन मण्डलों में 460 वन ग्रामीण वन विकास समितियों व जैव विविधता उप समितियों का गठन किया गया है। परियोजना के माध्यम से इन ग्रामीण वन विकास समितियों व जैव विविधता उप

समितियों के सौजन्य से पौधारोपण करवाया जा रहा है। हिमाचल में ग्रीन कवर को वर्ष 2030 तक 30% बढ़ाने में जाइका वानिकी परियोजना अहम भूमिका निभा रही है।

प्रदेश की सरकार ने ग्रीन कवर को बढ़ावा देने के लिए दो महत्वपूर्ण योजनाएँ शुरू की है, जिसमें मुख्य रूप से मुख्यमंत्री वन विस्तार योजना और राजीव गांधी वन संवर्धन योजना।

इन दोनों योजनाओं का मुख्य उदेश्य क्षेत्र की बंजर भूमि में हरियाली लाना है। इसमें स्थानीय युवक मंडल, महिला मंडल के सहयोग से क्षतिग्रस्त व बंजर भूमि पर पौधारोपण का कार्य किया जा रहा है। प्रदेश की इन
महत्वकांक्षी योजनाओं के तहत जाइका परियोजना प्रदेश में बंजर जमीन पर हरियाली लाने के लिए पौधारोपण अभियान चलाकर महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री वन विस्तार योजना के अंतर्गत जाइका वानिकी परियोजना ने 124 हेक्टेयर भूमि पर पौधरोपण किया।

जिसमें परियोजना से जुड़ी महिलाओं की सहभागिता पुरूषों की तुलना में अधिक देखी जा रही है। इस योजना के अंतर्गत प्रदेश में वन संरक्षण को रोजगार से जोड़ने के लिए पौधरोपण और रख-रखाव के लिए सरकार की आरे से वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। इस योजना के तहत प्रति हेक्टेयर 1 लाख 20 हजार रूपये तक की प्रोत्साहन राशि दी जाती है।

"जाइका वानिकी परियोजना का एक ही नारा, एक ही संकल्प, हरा-भरा हिमाचल प्रदेश हमारा"

राजीव गांधी वन संवर्धन योजना के अंतर्गत महिला मंडलों, युवक मंडालों और स्वयं सहायता समूहों के सहयोग से बंजर भूमि पर फलदार पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ स्थानीय रोजगार व आजीविका के अवसर पैदा करना है। इसके तहत राज्य सरकार ने वर्ष 2025 से 2030 तक प्रदेश में 5 हजार हेक्टेयर भूमि पर पौधरोपण का लक्ष्य रखा है। इस योजना के अंतर्गत बंजर भूमि पर फलदार पौधे लगाने के लिए 5 वर्षों के लिए 6.40 लाख रूपये तक की यहायता प्रदान की जा रही है, जिससे मुख्य रूप से महिला मंडलों, युवक मंडलों और स्वयं सहायता समूहों को लाभांवित किया जा रहा है। इस योजना को सफल बनाने के लिए प्रदेश सरकार ने वित्त वर्ष 2025-26 के लिए 100 करोड़ रूपये का बजट रखा था। जाइका वानिकी परियोजना महिला मंडल, युवक मंडल और स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को साथ लेकर पौधरोपण अभियान को सफल बना रही है। यह परियोजना केवल पौधारोपण कार्यक्रमों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह एक समग्र विकास मॉडल है, जिसमें पर्यावरण संतुलन, आजीविका संवर्धन और सामाजिक सशक्तिकरण तीनो को समान महत्व दिया जा रहा है।

हिमाचल में पहली बार जाइका वानिकी परियोजना ने रोपे विलुप्त हो रहे भोज पत्र के 1500 पौधे

- दुर्लभ प्रजाति भोज पत्र को जीवित करने में मिली सफलता
- किन्नौर के निचार, तरांडा और जानी में रोपे पांच-पांच सौ पौधे

हिमाचल प्रदेश में विलुप्त हो रही दुर्लभ प्रजाति भोज पत्र को जिंदा करने के लिए जाइका वानिकी परियोजना ने पहल शुरू कर दी है। परियोजना ने वर्ष 2024 में हिमालयन फोरेस्ट रिसर्च इंस्टीच्यूट के साथ एमओयू हस्ताक्षर कर जनजातीय क्षेत्रों में भोज पत्र के पौधों की सप्लाई करने के लिए सहमति जताई थी। इसके मद्देनजर इस बार यानी सितंबर 2025 में जिला किन्नौर के तरांडा, जानी और निचार में 500-500 पौधे रोपे गए। कुल मिलाकर इस बार मानसून सीजन के दौरान वन मंडल किन्नौर में भोज पत्र के 15 सौ पोधे रोपे गए। बता दें कि विलुप्त हो रही दुर्लभ प्रजाति के पौधे भोज पत्र को जिंदा करने के लिए जाइका वानिकी परियोजना को सफलता मिली है। हिमाचल प्रदेश में पहली बार इस प्रजाति के पौधों की नर्सरी तैयार करने से लेकर पौधरोपण तक सफलता मिली है। जाइका वानिकी परियोजना ने हिमालयन फोरेस्ट रिसर्च इन्टीच्यूट शिमला के सहयोग से पहली बार भोज पत्र की नर्सरी तैयार करवाई ताकि इस दुर्लभ प्रजाति एवं सांस्कृतिक पौधों को पुनः रोपित कर उनके प्राकृतिक स्थलों पर पौधरोपण अभियान के माध्यम से लगाया जा सके। इस दिशा में जाइका वानिकी परियोजना बेहतरीन कार्य कर रही है। भोज पत्र की संभावना के मद्देनजर 25 सितंबर 2025 को वन परिक्षेत्र निचार स्थित भावानगर में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिमालयन फोरेस्ट रिसर्च इन्टीच्यूट शिमला के निदेशक प्रभारी डा. संदीप शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. पितांबर नेगी और तकनीकी अधिकारी ज्वाला सिंह ने बोझ पत्र के पौधरोपण से लेकर उनके संरक्षण पर विस्तृत जानकारी दी।

30 हजार पौधे रोपने का लक्ष्यः डा. काप्टा

जाइका वानिकी परियोजना के जड़ी-बूटी सैल के निदेशक डा. एसके काप्टा ने बताया कि आने वाले समय में इस प्रजाति के पौधों को स्पीति, कुल्लू तथा अन्य प्राकृतिक स्थालों पर रोपित किया जाएगा। इस प्रयास के तहत परियोजना ने 30 हजार पौधे रोपित करने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा कि जाइका वानिकी परियोजना ने पहली बार जिला किन्नौर में 15 सौ पौधे रोपित कर सफलता हासिल की।

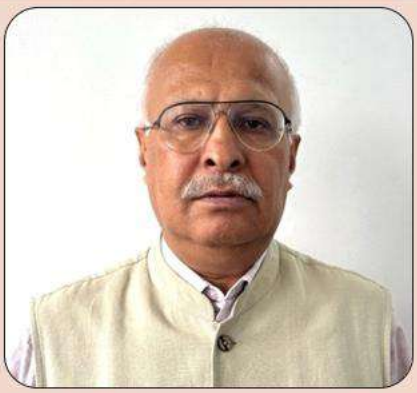

विलुप्त हो रहे औषधीय पौधों को वानिकी परियोजना कर रही जिंदा

- परियोजना ने शुरू की औषधीय खेती की नई पहल
- प्रदेश के विभिन्न वन मंडलों में रोपे कडू के 16 लाख 20 हजार पौधे

हिमाचल प्रदेश में विलुप्त हो रहे औषधीय पौधों को जिंदा करने और इनकी खेती के लिए जाइका वानिकी परियोजना ने नई पहल शुरू की है। इसमें मुख्य रूप से कडू की खेती के लिए ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को प्रेरित किया जा रहा है। परियोजना के अंतर्गत विभिन्न वन मंडलों में बनी ग्राम वन विकास समितियों और स्वयं सहायता समूहों के सहयोग से अब तक यानी वित्त वर्ष 2025-26 तक कडू यानी कुटकी के 16 लाख 20 हजार पौधे रोपे गए। जो अपने आप में एक सराहनीय कार्य है। गौरतलब है कि परियोजना ने वन मंडल किन्नौर के तरांडा और निगानी में 1 लाख, वन मंडल आनी के बागा सराहन और सरगा में 2 लाख 20 हजार और शरशा में 3 लाख, वन मंडल कुल्लू के माटी कोचर में 1 लाख 75 हजार, वन मंडल रोहडू के डोडरा-क्वार में 4 लाख, खशधार में 3 लाख, वन मंडल चैपाल के बम्टा में 1 लाख 70 हजार, सराहन में 3 लाख 60 हजार, वन मंडल बंजार के सैंज में कडू के 90 हजार पौधे रोपे गए। बताया गया कि इस औषधीय पौधों की खेती पूरी तरह से रसायन मुक्त होती है। इससे जल स्रोतों को भी कोई नुकसान नहीं पहुंचता है।

2 से 5 हजार रूपये प्रति किलो मिल रही कीमत

वर्तमान में कडु को स्थानीय बाजार में दो से पांच हजार रूपये प्रति किलोग्राम से हिसाब से कीमत मिल रही है। इसके अलावा औषधीय गणों से भरपूर चिरायता की खेती भी परियोजना के अंतर्गत की जा रही है। वर्तमान में चिरायता तीन से पांच सौ रूपये प्रति किलोग्राम के हिसाब से बिक रहा है। बता दें कि जाइका वानिकी परियोजना प्रदेश के जनजातीय जिला किन्नौर, वन मंडल आनी, रोहडू, चैपाल और कुल्लू के विभिन्न क्षेत्रों में औषधीय पौधों की खेती को अधिक से अधिक बढ़ावा देने के लिए बेहतरीन कार्य कर रही है।

कडू की जड़ों से तैयार हो रहा दवा

पिक्रोरिज़ा कुरोआ (कुटकी) यानी कडू एक ऐसा औषधीय पौधा है जो विलुप्त होने की कगार पर है। इस पौधे का उपयोग पारंपरिक और आधुनिक चिकित्सा प्रणालियों दोनों में किया जाता है, जहां इसकी जड़ों से दवा तैयार की जाती है। स्थानीय विक्रेताओं द्वारा अवैज्ञानिक दोहन के कारण यह पौधा अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है। पश्चिमी हिमालय में इसके सीमित वितरण क्षेत्र, छोटी आबादी और उच्च मूल्य के कारण इसे संरक्षण और खेती के लिए पहचाने गए 37 शीर्ष प्राथमिकता वाले पौधों में शामिल किया गया है। कुटकी की खेती न केवल आय का एक वैकल्पिक स्रोत प्रदान कर सकती है, बल्कि स्वरोजगार के अवसर भी पैदा कर सकती है।

कडू के औषधीय उपयोग

स्थानीय लोगों द्वारा पेट पर्द और तेज बुखार जैसी बीमारियों के इलाज के लिए कडू को अधिक महत्व दिया जाता है। इसके अलावा बिच्छू के डंक के इलाज, ब्लड प्रेशर, आंतों के दर्द, आंखों की बीमारी, पित्त रोग और गले की खराश के उपचार में उपयोगी है। बताया जा रहा है कि नेपाल और तिब्बती चिकित्सा विशेषज्ञ खांसी, जुकाम और बुखार के लिए राइजोम का उपयोग करते हैं।

"प्रदेश में विलुप्त हो रहे औषधीय पौधे कडू की खेती के लिए जाइका वानिकी परियोजना महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। वित्त वर्ष 2024 से लेकर 2026 तक 6 वन मंडलों में कडू के 16 लाख 20 हजार पौधे रोपे गए, आने वाले समय में सकारात्मक परिणाम सामने आएंगे"

-डा. एसके काप्टा
निदेशक, जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ।

जाइका वानिकी परियोजना ने खोले रोजगार व स्वरोजगार के द्वार

◆ आत्मनिर्भता से आजीविका सुधार की दिशा में काम कर रहे 10 हजार 6 लोग

9282 महिलाएं और 724 पुरूष प्रत्यक्ष तौर पर जुड़े हैं स्वरोजगार से

जाइका वानिकी परियोजना पिछले सात वर्षों यानी वर्ष 2018 से प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार और स्वरोजगार के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य कर रही है। राज्य के 22 वन मंडलों में कार्यांवित इस परियोजना के अंतर्गत 920 स्वयं सहायता समूह, 400 ग्राम वन विकास समितियों और 60 जैव विविधता उप समितियों के 10 हजार 6 लोग स्वरोजगार से जुड़े हैं। जो आत्मनिर्भरता से आजीविका सुधार के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। यह हर्ष की बात है कि इस परियोजना में महिलाओं की भागिदारी पुरूषों की तुलना में कहीं अधिक हैं। यानी 94 प्रतिशत महिलाएं इस परियोजना से जुड़कर अपनी आर्थिकी में सुधार कर रही हैं। बता दें कि 920 स्वयं सहायता समूहों में 10 हजार 6 सदस्यों में से 9282 महिलाएं और 724 सदस्य पुरूष हैं। इसके अलावा 22 वन मंडलों और 72 वन परिक्षेत्रों में शिक्षित बेरोजगार युवाओं को भी परियोजना में रोजगार के अवसर मिल चुके हैं, जो अपनी आजीविका कमा रहे हैं। कुल मिलाकर जाइका वानिकी परियोजना हिमाचल में वन तंत्र प्रबंधन, सामुदायिक विकास एवं आजीविका सुधार के लिए कार्य कर रही है। परियोजना का मुख्य लक्ष्य हिमाचल प्रदेश में सतत् सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए वन क्षेत्रों द्वारा पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं में सुधार किया जा रहा है। गौरतलब है कि जाइका वित्त पोषित हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना के तहत राज्य में लोगों के माध्यम से परियोजना का कार्यान्वयन हो रहा है। मशरूम की खेती, पत्तल का कारोबार, हथकरघा एवं बुनकर, सिलाई-कटाई और मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण, ऑर्गेनिक प्रोडक्ट्स को बढ़ावा देना, ग्रामीण क्षेत्रों में प्राकृतिक जल स्रोतों का संरक्षण करने सहित कई गतिविधियां चल रही हैं।

आजीविका सुधार के क्षेत्र में 24 मॉडल

आजीविका सुधार क्षेत्र में 24 मॉडल पर कार्य चल रहे हैं। इस क्षेत्र में आजीविका कमाने के लिए स्वयं सहायता समूहों को प्रशिक्षण दिए जा रहे हैं। कैपिटल कॉस्ट के तौर पर 75 प्रतिशत का बजट जाइका की ओर से दिए जाते हैं, जबकि 25 प्रतिशत स्वयं सहायता समूहों को स्वयं व्यय करना पड़ता है। विभिन्न स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार किए गए उत्पादों को भी अच्छी कीमत मिल रही है।

"जाइका वानिकी परियोजना के तहत 920 स्वयं सहायता समूह गठित हैं, जिसमें 10 हजार 6 लोग स्वरोजगार से जुड़े हैं। जिसमें 9282 महिलाएं और 724 पुरूष आत्मनिर्भरता से आजीविका सुधार के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं"

श्री श्रेष्ठा नंद
परियोजना निदेशक
जाइका वानिकी परियोजना।

जाइका वानिकी परियोजना से जुड़ी महिलाएं बन रही सशक्तिकरण की मिसाल

- विधायक कमलेश ठाकुर ने महिला स्वयं सहायता समूहों से किया सीधा संवाद
- बहतरीन कार्य करने वाली महिलाओं को किया सम्मानित
- अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर थपथपाई मेहनतकश महिलाओं की पीठ

जाइका वानिकी परियोजना से जुड़ी महिलाएं आज सशक्तिकरण की मिसाल बन रही हैं। 8 मार्च 2026 को देहरा के बचत भवन में आयोजित अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि देहरा विधानसभा क्षेत्र की विधायक कमलेश ठाकुर ने जाइका की मेहनतकश महिलाओं की पीठ थपथपाई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि आज हिमाचल प्रदेश की महिलाएं सशक्त बन चुकी हैं। वे पुरूषों का मुकाबला बखूबी कर रही हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने महिलाओं के लिए कई महत्वपूर्ण योजनाएं चलाई हैं, जिसका लाभ मिल रहा है।

इस अवसर पर कमलेश ठाकुर ने परियोजना से जुड़ी दूरदराज क्षेत्रों की महिलाओं के साथ ऑनलाइन और यहां पहुंची महिलाओं से सीधा संवाद किया। इससे पूर्व वल बल प्रमुख एवं जाइका वानिकी परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक डा. संजय सूद ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि वानिकी परियोजना से जुड़कर आज प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं आजीविका सुधार कर अपनी आर्थिकी को और अधिक मजबूत कर रही हैं। नेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नीकल टीचर्स एंड रिसर्च चंडीगढ़ की प्रोफेसर एवं अकादमिक विशेषज्ञ सलाहकार डा. मिनाक्षी सूद ने भी यहां उपस्थित महिलाओं को संबोधित किया।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार उत्पादों की प्रदर्शनी एवं बिक्री के लिए स्टॉल भी लगाए और विधायक कमलेश ठाकुर ने खूब सराहना भी की। इस अवसर पर विधायक कमलेश ठाकुर ने वन मंडल देहरा, धर्मशाला, नूरपुर और पालमपुर के अंतर्गत बेहतरीन कार्य करने वाले स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को सम्मानित भी किया। जबकि 18 अन्य वन मंडलों के स्वयं सहायता समूहों को ऑनलाइन माध्यम से सम्मानित किया गया।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर जाइका वानिकी परियोजना से सभी वन मंडल स्तर पर भी कार्यक्रम आयोजित किया। जिसकी अध्यक्षता संबंधित वन मंडलाधिकारियों ने की। इस अवसर पर सीएफ हमीरपुर निशांत मंढोत्रा, सीएफ धर्मशाला बासु कौशल, परियोजना निदेशक श्रेष्ठा नंद शर्मा, वन मंडलाधिकारी देहरा सन्नी वर्मा, निदेशक वन विकास निगम धर्मशाला नीतिन पाटिल, वन मंडलीय प्रबंधक वन निगम धर्मशाला अंबरीश शर्मा, एपीडी कुल्लू वंदना ठाकुर समेत विभाग और परियोजना के अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

पर्यटन के मानचित्र पर उभरा कुल्लू का काइसधार ईको ट्रेल

जिला कुल्लू का पिछड़ा क्षेत्र काइसधार अब पर्यटन की दृष्टि से उभर कर सामने आया चुका है। प्रदेश सरकार, वन विभाग और जाइका वानिकी परियोजना के सहयोग से काइसधार ईको ट्रेल प्रोजेक्ट का कार्य वर्ष 2023 में शुरू हुआ और सितंबर 2024 में इसे जनता को समर्पित किया गया। समुद्र तल से 25 सौ मीटर की ऊंचाई और कुल्लू से 22 किलोमीटर की दूरी पर स्थित लोट से 12.5 किलोमीटर का ट्रैक तैयार कर इसे ईको टूरिज्म की दृष्टि से उभारा गया। इस ट्रैक पर चार ई-कार्ट संचालित हैं, जो प्रदूषण मुक्त और पर्यावरण मित्र भी है।

पहाड़ों के बीच छुपा एक रास्ता है, काइसधार ईको ट्रेल। यह सिर्फ एक ट्रेल नहीं, बल्कि एक एहसास है। सुबह की हल्की धूप जब देवदार के ऊंचे पेड़ों के बीच से छनकर नीचे आती, तो ऐसा लगता जैसे कोई सुनहरी चादर ज़मीन पर बिछ गई हो। स्वच्छ और इंडी हवा, पक्षियों की चहचहाहट और पत्तों की सरसराहट उसके साथ यह वादियां अब देश-विदेश के पर्यटकों को अपनी ओर खींच लाती है। सितंबर 2024 में प्रदेश के तत्कालीन मुख्य संसदीय सचिव एवं कुल्लू के श्री विधायक सुंदर सिंह ठाकुर ने काइसधार ईको ट्रेल का शुभारंभ किया। यहां न केवल सैलानी आते हैं, बल्कि स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर भी मिले। यहां एक महिला स्वयं सहायता समूह हैं।

जाइका वानिकी परियोजना से जुड़ी महिलाएं पारंपरिक व्यंजन तैयार कर सैलानियों को परोसती हैं और अपनी आजीविका में भी सुधार कर रही हैं। यही वजह है कि आज जाइका वानिकी परियोजना के सहयोग से इस क्षेत्र का नाम पर्यटन की मानचित्र पर उभर कर सामने आ चुका है।

6 मई 2025 में जब जाइका इंडिया की टीम मध्यावधि समीक्षा के लिए हिमाचल आई तो मिशन मेंबर्स यहां पहुंचे। जाइका इंडिया के चीफ ऑफ डेवेल्पमेंट ऑपरेशन्स विनीत सरीन और जाइका इंडिया की प्रतिनिधि युकारी इनागकी ने भी ई-कार्ट का लुत्फ उठाया। प्रदेश के उप मुख्यमंत्री श्री मुकेश अग्निहोत्री, तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री राजेश धर्माणी, राजस्व मंत्री श्री जगत सिंह नेगी, कुल्लू के विधायक श्री सुंदर सिंह ठाकुर, अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री कमलेश कुमार पंत समेत कई हस्तियों से भी काइसधार ईको ट्रेल की सराहना की।

"काइसधार जिला कुल्लू का पिछड़ा हुआ क्षेत्र था, यहां पर्यटन की भरपूर संभावनाएं थी। प्रदेश सरकार और वन विभाग ने जाइका वानिकी परियोजना के सहयोग से इस क्षेत्र को पर्यटन की दृष्टि से विश्व के मानचित्र पर लाने के लिए प्रस्ताव तैयार किया और 2023 में कार्य शुरू किया। सितंबर 2024 में इसका शुभारंभ किया गया। आज काइसधार क्षेत्र पर्यटन की मानचित्र पर उभर कर सामने आ चुका है। देश-विदेश से सैलानी यहां आते हैं और स्थानीय लोगों को भी रोजगार के अवसर मिल गए हैं। इस क्षेत्र को विकसित करने में जाइका वानिकी परियोजना का महत्वपूर्ण योगदान रहा"

श्री एंजल चौहान
वन मंडलाधिकारी, कुल्लू।

जाइका इंडिया ने भी सराहे कार्य, दूसरे चरण की उम्मीद बरकरार

जाइका इंडिया ने हिमाचल प्रदेश में हुए कार्यों की सराहना की, जिससे यह परियोजना दूसरे चरण की ओर अग्रसर होने की उम्मीद जगी है। हालांकि परियोजना की समयावधि मार्च 2028 तक है, लेकिन जिस तरह से पहाड़ी राज्य हिमाचल प्रदेश में आजीविका सुधार, वन एवं पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ जैव विविधता के क्षेत्र में हुए कार्यों को देख इस जाइका वानिकी परियोजना फेस-टू में भी प्रवेश कर सकती है। हिमाचल प्रदेश में अब तक हुए कार्यों की समीक्षा करने के लिए जाइका इंडिया की दो सदस्यीय टीम 5 से 9 मई 2025 तक हिमाचल दौरे पर पहुंची तो मंडी और कुल्लू जिले में हुए कार्यों की समीक्षा की गई।

मध्यावधि समीक्षा के मिशन मेंबर एवं जाइका इंडिया के चीफ ऑफ़ डेवलपमेंट ऑपरेशन्स श्री विनीत सरीन और जाइका इंडिया की प्रोजेक्ट फार्मूलेशन एडवाइज़र युकारी इनागकी 5 मई को कुल्लू पहुंचे और पहले ही दिन मोहल नर्सरी का निरीक्षण किया। इस अवसर पर सीएफ कुल्लू श्री संदीप शर्मा और वन मंडलाधिकारी कुल्लू श्री एंजल चैहान ने विनीत सरीन और युकारी इनागकी को नर्सरी में पौधों की क्षमता और वस्तु स्थिति के बारे अवगत करवाया।

परियोजना ने 6 मई 2025 को कुल्लू के मोहल स्थित नेचर पार्क में जाइका मेले का आयोजन किया, जिसका शुभारंभ कुल्लू के विधायक श्री सुंदर सिंह ठाकुर ने किया। इस मौके पर जाइका इंडिया के चीफ ऑफ़ डेवलपमेंट ऑपरेशन्स श्री विनीत सरीन और प्रोजेक्ट फॉर्मूलेशन एडवाइज़र युकारी इनागकी भी उपस्थित रहे। मिशन मेंबर्स ने यहां लगाए स्टॉल का मुआयना किया और उन्होंने स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार किए उत्पादों की जमक सराहना की।

परियोजना के अंतर्गत बेहतरीन कार्य करने वाले स्वयं सहायता समूहों और ग्राम वन विकास समितियों को पुरस्कार से नवाजा गया। बजरंगबली ग्राम वन विकास समिति मंडी को तृतीय पुरस्कार, ग्राम वन विकास समिति डुगीलग को द्वितीय और ग्राम वन विकास समिति कठोगन को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जबकि वन मंडल रोहड़ू के अंतर्गत ग्राम वन विकास समिति बध्यार बजानू को ऑनलाइन माध्यम से सांत्वना पुरस्कार से नवाजा गया।

इसी तरह से जागृति स्वयं सहायता समूह निचार और अंबिका स्वयं सहायता समूह भुट्टी को तृतीय पुरस्कार, जोगनी माता स्वयं सहायता समूह सरकाघाट को द्वितीय और बृजेश्वरी माता स्वयं सहायता समूह शाहपुर को प्रथम पुरस्कार का खिताब मिला। जाइका इंडिया के चीफ ऑफ़ डेवलपमेंट ऑपरेशन्स श्री विनीत सरीन ने मेले में उपस्थित जनसभा को संबोधित कर स्वयं सहायता समूहों और ग्राम वन विकास समितियों के सदस्यों में जोश भरा।

जाइका इंडिया के चीफ ऑफ़ डेवलपमेंट ऑपरेशन्स श्री विनीत सरीन ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि हिमाचल प्रदेश वन विभाग के अंतर्गत जाइका वानिकी परियोजना बेहतर काम कर रही है।

7 मई 2025 को यह टीम दशमी वारदा सेकरेड ग्रोव पहुंची, जहां ग्राम वन विकास समिति और जैव विविधता उप समिति के सदस्यों के साथ वार्ता किया। उसके बाद मिशन मेंबर्स कुल्लू के लग घाटी के डुगीलग पहुंचे और यहां अब तक हुए कार्यों का मूल्यांकन किया। 8 मई 2025 को मिशन मेंबर्स वन मंडल मंडी के अंतर्गत बिहनधार पहुंची, जहां पत्तल का कारोबार कर रहे स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों से संवाद किया। उसके बाद वन मंडल मंडी में मध्यावधि समीक्षा बैठक हुई। जिसमें परियोजना के अंतर्गत सभी वन मंडलों के अधिकारियों ने भाग लिया। परियोजना निदेशक श्री श्रेष्ठा नन्द शर्मा ने मिशन मेंबर्स के समक्ष परियोजना की गतिविधियों पर बेहतरीन प्रस्तुति दी। जाइका इंडिया के चीफ ऑफ़ डेवलपमेंट ऑपरेशन्स श्री विनीत सरीन ने परियोजना के तहत चल रहे कार्यों को और अधिक गति देने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

RESILIENT
ADAPTABLE
SUSTAINABLE
FOREST ECOSYSTEM CLIMATE PROOFING PROJECT
HIMACHAL PRADESH

310 करोड़ की केएफडब्ल्यू परियोजना हुई मील का पत्थर साबित

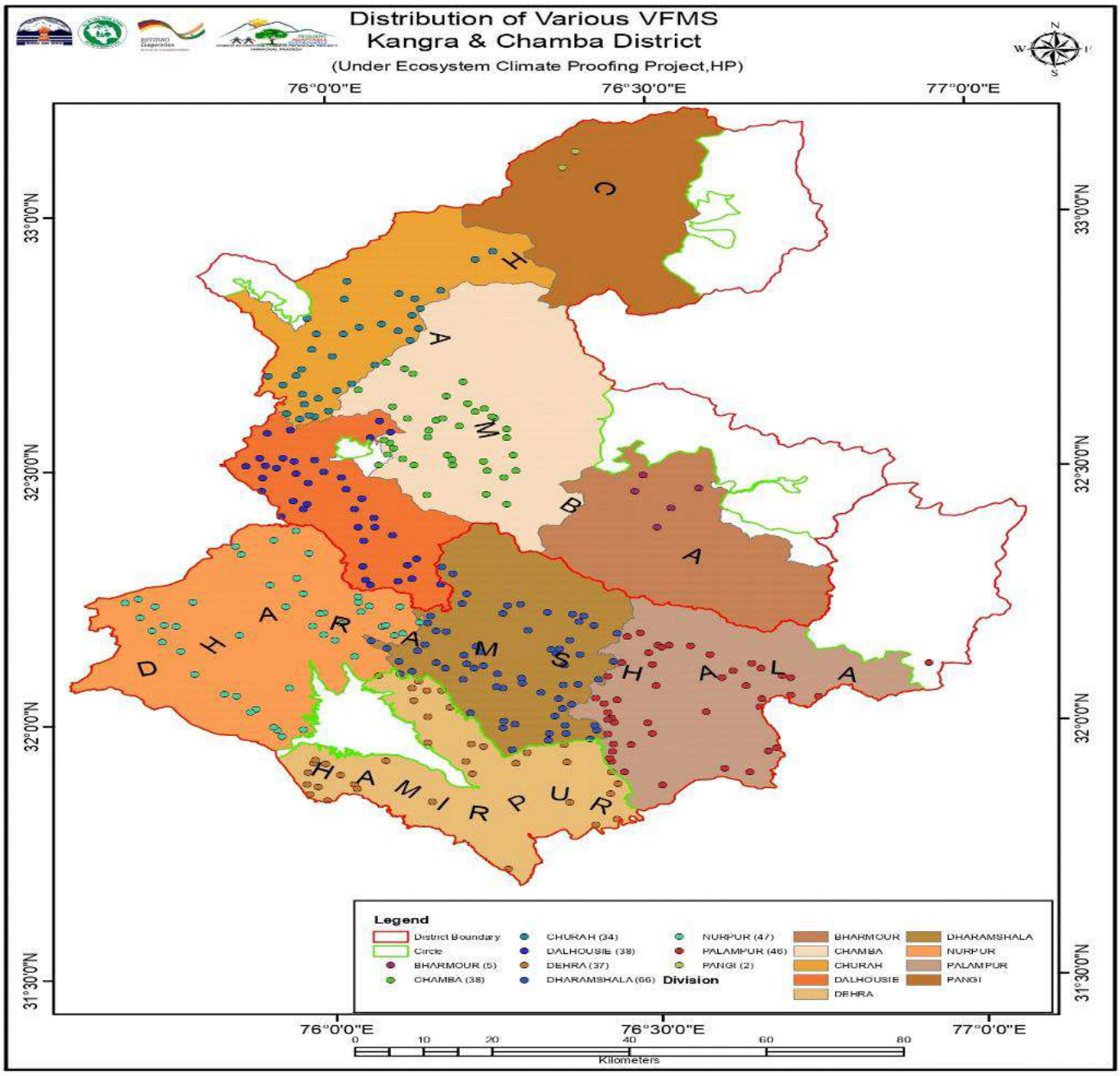

वर्ष 2020 से मार्च 2026 तक चली हिमाचल प्रदेश में केएफडब्ल्यू परियोजना, विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र जलवायु-प्रतिरोध परियोजना कांगड़ा और चंबा जिले के लिए मील का पत्थर यह लगभग 310 करोड़ की जर्मन-सहायता प्राप्त परियोजना है, जो जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने, जैव विविधता बढ़ाने और वनों पर आधारित आजीविका को बेहतर बनाने पर केंद्रित है।

इस परियोजना के माध्यम से जिला कांगड़ा और चंबा के ग्रामीण क्षेत्रों में वनों पर आधारित आजीविका सुधार के कार्य शुरू हुए, जिसमें सथानीय लोगों को स्वरोजगार से जोड़ा गया। हालांकि इस परियोजना की अवधि मार्च 2026 है, लेकिन हमें उम्मीद है कि चरण में भी प्रवेश करे।

परियोजना का संक्षिप्त विवरण

इंडो-जर्मन विकास सहयोग के संयुक्त मिशन ने हिमाचल प्रदेश का दौरा किया। इस दौरे के उपरांत हिमाचल प्रदेश में वन प्रबंधन को सुदृढ़ करने हेतु एक कार्यक्रम की परिकल्पना की गईए जिसमें वन प्रबंधकों एवं लाभार्थियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की गई।

परियोजना का मुख्य उद्देश्य वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन की ऐसी प्रणाली विकसित एवं लागू करना है, जो जैव विविधता के संरक्षण में योगदान दे तथा वनों से प्राप्त होने वाले सतत लाभों को तत्काल वन उपयोगकर्ताओं के साथ-साथ वन पारितंत्रों द्वारा पोषित जल संसाधनों के अंतिम लाभार्थियों तक पहुँचाने में सहायक हो।

वर्ष 2012 में नई दिल्ली में आयोजित इंडो.जर्मन विकास सहयोग परामर्श बैठक में हिमाचल प्रदेश वन विभाग ने भारत सरकार को द्विपक्षीय वित्तीय सहयोग हेतु एक प्रारंभिक परियोजना प्रतिवेदन (PPR)प्रस्तुत किया। इसके परिणामस्वरूप 17 दिसंबर 2014 को पृथक समझौते पर हस्ताक्षर हुए। तत्पश्चात 29 दिसंबर 2015 को ऋण समझौते पर हस्ताक्षर किए गए, जिससे परियोजना का औपचारिक शुभारंभ हुआ।

परियोजना की मुख्य तिथियाँ

- पृथक समझौताः 17 दिसंबर 2014
- ऋण समझौताः 29 दिसंबर 2015
- परियोजना अवधिः 29 दिसंबर 2016 से 28 दिसंबर 2022
- परियोजना का शुभारंभः जनवरी 2016
- परियोजना प्रबंधन परामर्शदाता (PMC)की नियुक्तिः अगस्त 2016
- मॉडल माइक्रो प्लान एवं वन प्रबंधन योजना (FMP) दिशा-निर्देश स्वीकृतः अप्रैल 2017
- वर्ष 2017 में 45 चयनित माइक्रो प्लान स्थलों पर पायलट आधार पर 5 हेक्टेयर रोपण की अनुमति
- तकनीकी मानक एवं अंतिम EMP दिशा-निर्देश स्वीकृतः अप्रैल 2018
- वास्तविक क्रियान्वयन प्रारंभः मानसून 2018
- प्रारंभिक समझौते के अनुसार परियोजना दिसंबर 2022 में समाप्त होनी थी, किन्तु अब इसे 30 मार्च 2026 तक बढ़ा दिया गया है।

RESILIENT ADAPTABLE SUSTAINABLE
FOREST ECOSYSTEM CLIMATE PROOFING PROJECT
HIMACHAL PRADESH

परियोजना की वित्तीय रूपरेखा

परियोजना की कुल लागत 37.17 मिलियन यूरो (304.76 करोड़) है, जिसमें 32 मिलियन यूरो वित्तीय सहयोग शामिल है (30 मिलियन यूरो ऋण,1 मिलियन यूरो अनुदान सहायक उपायों हेतु तथा 1 मिलियन यूरो अनुदान प्रारंभिक चरण की गतिविधियों हेतु)

हिमाचल प्रदेश सरकार का अंशदान 3.72 मिलियन यूरो निर्धारित किया गया है, जो मुख्यतः प्रतिनियुक्त कर्मचारियों के वेतन एवं परियोजना प्रबंधन हेतु मौजूदा अवसंरचना के उपयोग पर आधारित है।

वित्तीय विवरणः

- **केएफडब्ल्यू ऋणः** 30 मिलियन यूरो (246.02 करोड़) 86.11%
- **केएफडब्ल्यू अनुदानः** 2 मिलियन यूरो (16.40 करोड़)
- **हिमाचल प्रदेश सरकार का अंशदानः** (30.53 करोड़)10.02%
- **लाभार्थी अंशदानः** (11.81 करोड़)3.87%

RESILIENT ADAPTABLE SUSTAINABLE
FOREST ECOSYSTEM CLIMATE PROOFING PROJECT
HIMACHAL PRADESH

हिमाचल सरकार का अंश निम्न मदों पर व्यय होता है

- राज्य परियोजना प्रबंधन इकाई के स्टाफ का वेतन(1 मुख्य परियोजना निदेशक, 2 उप परियोजना निदेशक, 4 सहायक परियोजना निदेशक एवं 10 मंत्रालयिक कर्मचारी)
- SPMU के परिचालन व्यय
- चीड़ वनों में सिल्वीकल्चर संचालन की 50% लागत
- मॉनिटरिंग एवं मूल्यांकन घटक की 15% लागत

परियोजना की संरचना

परियोजना को मूल रूप से 7 वर्षों के लिए शुरू किया गया था।

- पहला वर्षः तैयारी एवं क्षमता निर्माण चरण
- अगले 6 वर्षः पूर्ण कार्यान्वयन चरण

वर्ष 2 से वर्ष 4 तक रोपण गतिविधियाँ प्रस्तावित थीं तथा अंतिम 3 वर्षों को संरक्षण एवं सुदृढ़ीकरण चरण के रूप में नियोजित किया गया था।

परियोजना का वर्तमान कार्यक्षेत्र

यह परियोजना वर्तमान में हिमाचल प्रदेश के चंबा एवं कांगड़ा जिलों की 8 वन मंडलों के 33 वन परिक्षेत्रों को आच्छादित करती है।

परियोजना 307 माइक्रो प्लानों के माध्यम से 13,365.39 हेक्टेयर क्षेत्र को लक्षित कर रही है।

माइक्रो प्लानों की स्थितिः

क्रमांक	मंडल	लक्ष्य	क्रियान्वित
1	धर्मशाला	66	65
2	पालमपुर	45	45
3	नूरपुर	47	47
	कुल (**धर्मशाला सर्किल**)	158	157
4	देहरा	45	37
	कुल (**हमीरपुर सर्किल**)	45	37
5	डलहौजी	41	39
6	चुराह	36	34
7	चंबा	38	35
8	भरमौर	5	5
	कुल (**चंबा सर्किल**)	123	116
	कुल योग	**326**	**307**

स्प्रिंगशेड योजनाओं की स्थितिः

क्रमांक	मंडल	लक्ष्य	क्रियान्वित
1	धर्मशाला	31	31
2	पालमपुर	24	27
3	नूरपुर	20	19
	कुल (**धर्मशाला सर्किल**)	75	77
4	देहरा	10	11
	कुल (**हमीरपुर सर्किल**)	10	11
5	डलहौजी	15	15
6	चुराह	15	9
7	चंबा	35	35
	कुल (**चंबा सर्किल**)	65	59
	महायोग	150	147

पृष्ठभूमि

VFMS मोर्तू में कुल 337 सदस्य (185 पुरुष और 152 महिलाएँ)पाँच गाँवों से जुड़े हुए हैं। परियोजना शुरू होने से पहले इस क्षेत्र को गंभीर पारिस्थितिक और आजीविका संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा था।

समुदाय मुख्य रूप से वन भूमि पर पशुओं के चराई पर निर्भर था, लेकिन चारे की कमी, सिंचाई जल और पीने के पानी की कमी के कारण ग्रामीणों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। खुले में घूमने वाले पशु और जंगली जानवर नवरोपित पौधों को नुकसान पहुँचाते थे।

इसके अलावा, लैंटाना नामक आक्रामक प्रजाति का फैलाव 50% से अधिक क्षेत्र में हो गया था, जिससे बड़ी भूमि अनुपयोगी हो गई थी।

इन समस्याओं के समाधान के लिए परियोजना टीम ने जागरूकता बैठकें आयोजित कीं और चार उपयोगकर्ता समूह बनाए

बैंकहंडी माता | बंगोटू | नवासी माता | कोशिश

माइक्रोप्लान सितंबर 2021 में स्वीकृत हुआ, जिसकी कुल लागत 70.87 लाख थी। इसमें शामिल थेरू

ग्रीन इन्वेस्टमेंट | मृदा एवं जल संरक्षण कार्य | वन संरक्षण प्रोत्साहन

प्रवेश बिंदु गतिविधियाँ (Entry Point Activties)

लैंटाना उन्मूलन

लैंटाना को हटाने के लिए CRS(Cut Root Stock) तकनीक में प्रशिक्षण दिया गया। इससे न केवल भूमि पुनः उत्पादक बनी बल्कि ग्रामीणों को रोजगार के अवसर भी मिले।

पौधारोपण

कुल 29,275 पौधे लगाए गए, जिनमें प्रमुख प्रजातियाँ शामिल हैं:

देवदार | बान | दाडू | पज्जा | कैन्थ

रीठा | चुल्ली | मोराश | शीशम | अखरोट

समुदाय की सक्रिय भागीदारी और फेंसिंग के कारण पौधों की जीवित रहने की दर 80% से अधिक रही।

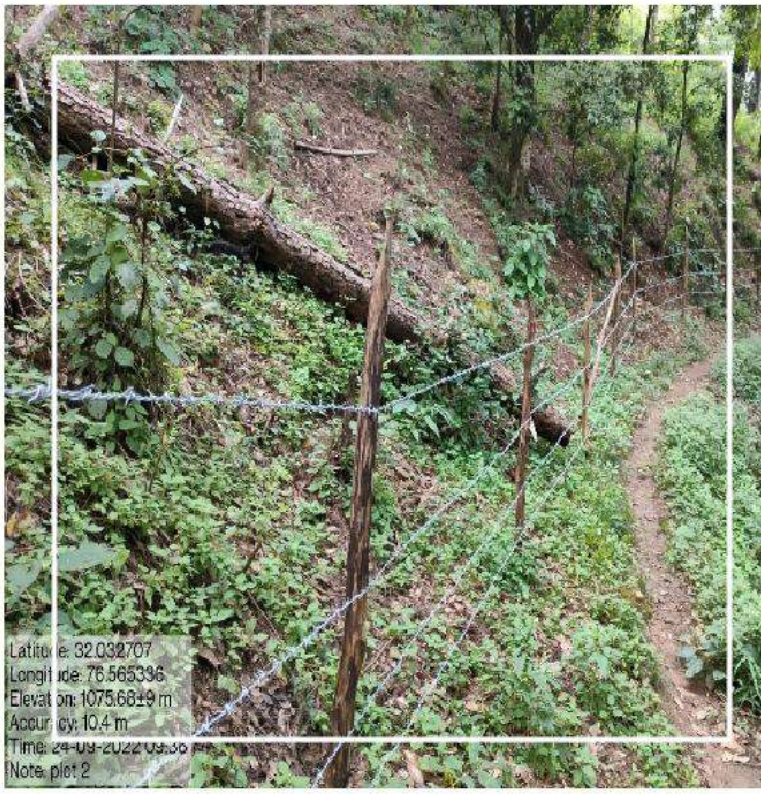

मृदा एवं जल संरक्षण कार्य

पोंग डैम जलाशय में बहाव को रोकनेए मिट्टी के कटाव को कम करने और नमी बनाए रखने के लिए विभिन्न संरचनाएँ बनाई गईं।

(फोटोः VFMS ड्रामन में ड्राई स्टोन चेक डैम - 2022-23)

जल संचयन संरचनाएँ (Water Harvesting Structures - WHS)

जल संचयन संरचनाओं नेः

- सिंचाई सुविधा बढ़ाई
- फसल उत्पादन में वृद्धि की
- पशुओं और वन्यजीवों के लिए पेयजल उपलब्ध कराया

स्प्रिंगशेड प्रबंधन

स्प्रिंगशेड क्षेत्र में किए गए कार्यों से मोर्तू झरना पुनर्जीवित हुआ।
अब जल प्रवाहः

- पहलेः 1 लीटर पानी भरने में 10 मिनट
- अबः 1 लीटर पानी भरने में 5 मिनट

इससे सूखे समय में भी पीने के पानी की उपलब्धता सुनिश्चित हुई।

प्रभाव / परिणाम

गुणात्मक प्रभाव

- उपयोगकर्ता समूहों के माध्यम से मजबूत सामुदायिक भागीदारी
- स्थानीय स्तर पर चारा उपलब्ध होने से महिलाओं का समय और खर्च बचा
- पिछले दो वर्षों में वनाग्नि की कोई घटना नहीं
- ग्रामीणों और वन विभाग के बीच विश्वास बढ़ा
- बानए देवदार और मोराश की प्राकृतिक पुनर्जनन दिखाई दिया

मात्रात्मक प्रभाव

- 29,275 पौधे लगाए गए
- 80% से अधिक पौधों का जीवित रहना
- चारे की उपलब्धता में वृद्धि
- भूजल पुनर्भरण में सुधार
- कृषि और वनस्पति विकास में वृद्धि
- झरने के जल प्रवाह में 50% वृद्धि
- अवैध चराई और अवैध कटाई में कमी

VFMS मोर्तू एक उत्कृष्ट उदाहरण है कि समुदाय आधारित पहल कैसे एक साथ वन पुनर्स्थापन और आजीविका सुधार कर सकती है।

पारंपरिक ऊपर से नीचे मॉडल के विपरीत, इस परियोजना में स्थानीय उपयोगकर्ता समूहों को नेतृत्व दिया गया, जिससे कार्यों की स्थिरता सुनिश्चित हुई।

लैंटाना उन्मूलन, मृदा संरक्षण, जल संचयन और स्प्रिंगशेड प्रबंधन ने मिलकर एक समग्र मॉडल तैयार किया, जिससेः

- वन स्वास्थ्य में सुधार हुआ
- जल सुरक्षा बढ़ी
- समुदाय की आजीविका मजबूत हुई

यह मॉडल अन्य वन क्षेत्रों में भी आसानी से दोहराया जा सकता है।

RESILIENT ADAPTABLE SUSTAINABLE
FOREST ECOSYSTEM CLIMATE PROOFING PROJECT
HIMACHAL PRADESH

पुनरावृत्ति और विस्तार रणनीति

VFMS मोर्तू की सफलता को अन्य क्षेत्रों में लागू करने के लिए निम्न कदम आवश्यक हैंः

- सामुदायिक जागरूकता और समूह गठन
- आक्रामक प्रजाति प्रबंधन (लैंटाना उन्मूलन)
- स्थानीय प्रजातियों के साथ पौधारोपण
- जल संरक्षण संरचनाएँ
- स्प्रिंगशेड प्रबंधन कार्य
- आजीविका के साथ पर्यावरण संरक्षण का समन्वय

15 हजार हेक्टेयर भूमि पर मिट्टी एवं जल संरक्षण केएफडब्ल्यू परियोजना की उल्लेखनीय पहल

हिमाचल प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों में मिट्टी का कटाव और जल संरक्षण एक बड़ी चुनौती रही है। इस समस्या से निपटने के लिए केएफडब्ल्यू (KFW) परियोजना के अंतर्गत जिला कांगड़ा और जिला चंबा में व्यापक स्तर पर कार्य किए गए हैं। इस परियोजना के तहत लगभग 15 हजार हेक्टेयर भूमि पर मिट्टी एवं जल संरक्षण के बेहतरीन कार्य कर प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और ग्रामीण आजीविका को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है।

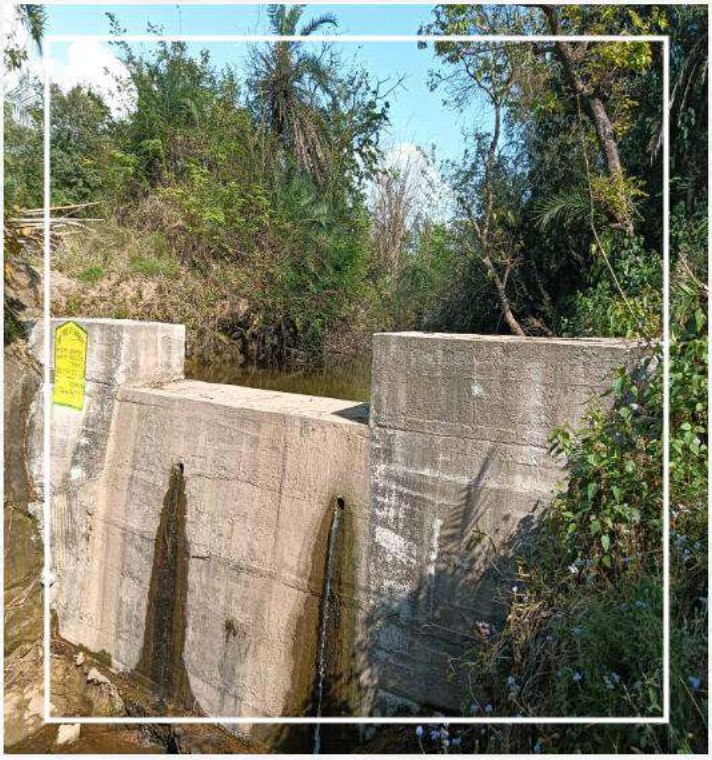

मिट्टी और जल संरक्षण की आवश्यकता

पर्वतीय क्षेत्रों में ढलानदार भूमि, अनियमित वर्षा और वनों की कटाई के कारण मिट्टी का कटाव तेजी से होता है। इससे कृषि भूमि की उर्वरता घटती है, जल स्रोत सूखने लगते हैं और पर्यावरणीय असंतुलन पैदा होता है। ऐसी परिस्थितियों में मिट्टी और जल संरक्षण के उपाय अत्यंत आवश्यक हो जाते हैं।

परियोजना के अंतर्गत किए गए प्रमुख कार्य

केएफडब्ल्यू परियोजना के अंतर्गत कांगड़ा और चंबा जिलों में कई प्रभावी गतिविधियाँ लागू की गईं, जिनमें प्रमुख रूप से-

- चेक डैम और गली प्लग निर्माण
- कंटूर ट्रेंच और कंटूर बंडिंग
- जल संचयन संरचनाओं का निर्माण
- वनरोपण और पौधारोपण
- चरागाह विकास और भूमि उपचार कार्य

इन कार्यों का मुख्य उद्देश्य वर्षा के पानी को भूमि में रोकना, मिट्टी के कटाव को कम करना और प्राकृतिक जल स्रोतों को पुनर्जीवित करना रहा है।

पर्यावरण और कृषि को मिला लाभ

इस परियोजना के परिणामस्वरूप कई सकारात्मक बदलाव देखने को मिले हैं। मिट्टी के कटाव में कमी आई है, भूजल स्तर में सुधार हुआ है और वर्षा का पानी अधिक समय तक भूमि में संरक्षित रहने लगा है। इसके साथ ही स्थानीय किसानों को भी लाभ मिला है, क्योंकि भूमि की उर्वरता बढ़ने से कृषि उत्पादन में सुधार हुआ है।

स्थानीय समुदाय की भागीदारी

परियोजना की सफलता में स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी महत्वपूर्ण रही है। ग्रामीणों को प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से मिट्टी एवं जल संरक्षण के महत्व से अवगत कराया गया। इससे लोगों में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित हुई।

निष्कर्ष

कांगड़ा और चंबा जिलों में केएफडब्ल्यू परियोजना के तहत 15 हजार हेक्टेयर भूमि पर किए गए मिट्टी एवं जल संरक्षण कार्य पर्यावरण संरक्षण और ग्रामीण विकास की दिशा में एक सराहनीय पहल है। यह परियोजना न केवल प्राकृतिक संसाधनों को बचाने में सहायक सिद्ध हुई है, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक स्थायी और सुरक्षित पर्यावरण सुनिश्चित करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम है।

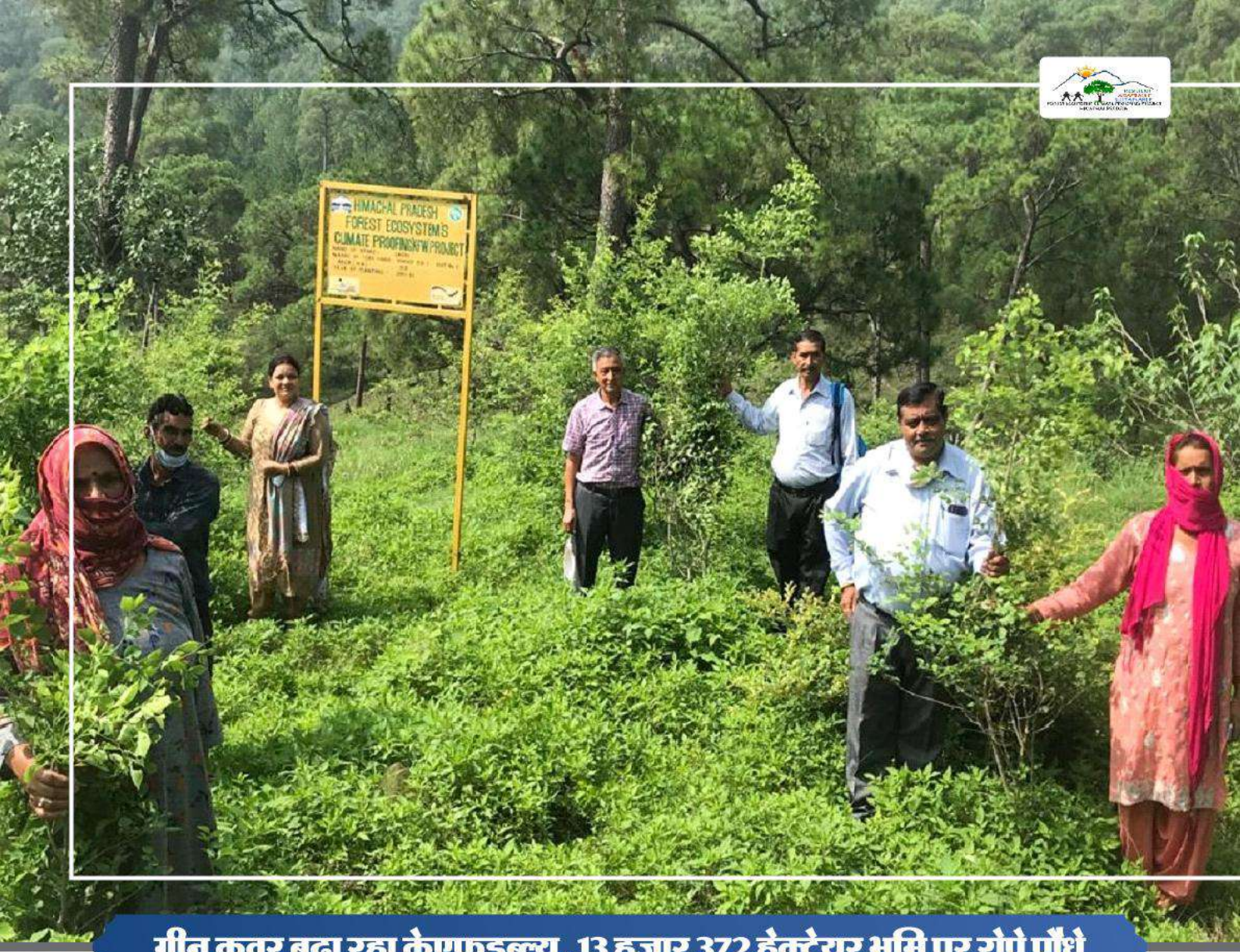

ग्रीन कवर बढ़ा रहा केएफडब्ल्यू, 13 हजार 372 हेक्टेयर भूमि पर रोपे पौधे

हिमाचल प्रदेश में पर्यावरण संरक्षण और हरित क्षेत्र को बढ़ाने की दिशा में केएफडब्ल्यू परियोजना महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इस परियोजना के अंतर्गत अब तक 13 हजार 372 हेक्टेयर भूमि पर पौधरोपण किया जा चुका है।

यह कार्य विशेष रूप से कांगड़ा और चंबा जिलों में संचालित परियोजना क्षेत्रों में किया गया है, जिससे इन क्षेत्रों में हरियाली बढ़ाने और पारिस्थितिकी संतुलन को मजबूत करने में मदद मिली है।

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम

पर्वतीय क्षेत्रों में वनों का संरक्षण और नए पौधों का रोपण अत्यंत आवश्यक होता है। पौधरोपण से न केवल जंगलों का विस्तार होता है, बल्कि मिट्टी के कटाव को रोकने, जल स्रोतों को संरक्षित रखने और वन्यजीवों के लिए बेहतर आवास उपलब्ध कराने में भी मदद मिलती है। केएफडब्ल्यू परियोजना के तहत किए गए पौधरोपण कार्यों ने इन सभी उद्देश्यों को साकार करने में अहम योगदान दिया है।

स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी

इस परियोजना की विशेषता यह रही कि इसमें स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की गई। कांगड़ा और चंबा जिलों में परियोजना से जुड़े ग्रामीणों, स्वयं सहायता समूहों और स्थानीय संस्थाओं ने पौधरोपण कार्यक्रमों में बढ़.चढ़कर हिस्सा लिया। लोगों ने न केवल पौधे लगाए, बल्कि उनकी देखभाल और संरक्षण की जिम्मेदारी भी निभाई।

पारिस्थितिकी और आजीविका को लाभ

पौधरोपण से क्षेत्र में हरित आवरण बढ़ा है, जिससे पर्यावरण संरक्षण को मजबूती मिली है। इसके साथ हीए कई स्थानों पर फलदार और उपयोगी प्रजातियों के पौधे लगाए गए हैं, जो भविष्य में स्थानीय लोगों की आजीविका को भी सहारा प्रदान करेंगे। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में आय के नए अवसर भी विकसित होने की संभावना है।

निष्कर्ष

कांगड़ा और चंबा जिलों में केएफडब्ल्यू परियोजना के तहत 13,372 हेक्टेयर भूमि पर किया गया पौधरोपण पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक सराहनीय पहल है। यह प्रयास न केवल हरित क्षेत्र को बढ़ाने में सहायक है, बल्कि स्थानीय समुदाय को प्रकृति से जोड़ते हुए सतत विकास की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम साबित हो रहा है।

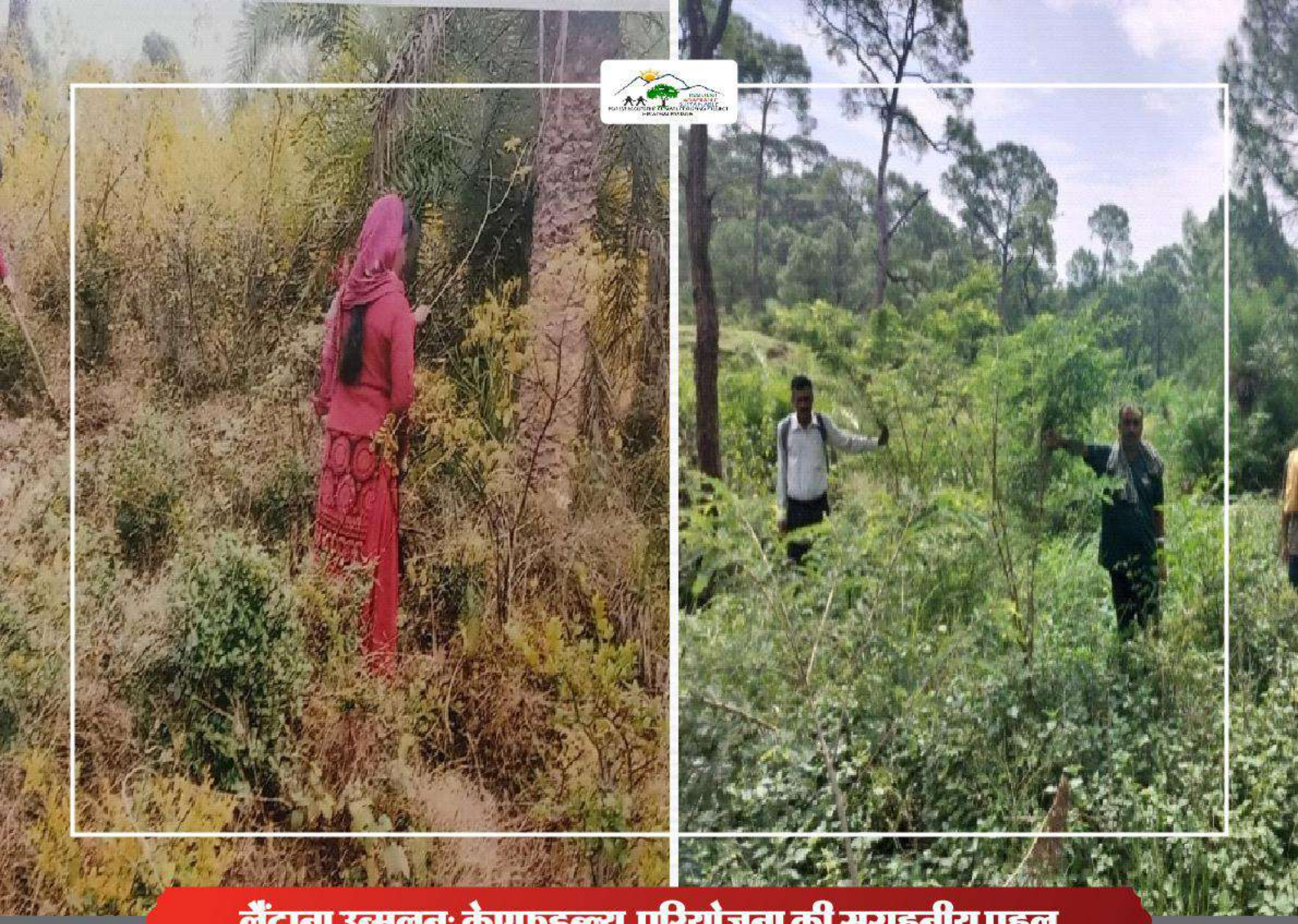

लैंटाना उन्मूलनः केएफडब्ल्यू परियोजना की सराहनीय पहल

हिमाचल प्रदेश के वन क्षेत्रों में तेजी से फैलने वाली लैंटाना एक गंभीर पर्यावरणीय समस्या बन चुकी है। यह एक आक्रामक झाड़ीदार पौधा है, जो जंगलों की प्राकृतिक वनस्पति को नुकसान पहुंचाता है और स्थानीय जैव विविधता को प्रभावित करता है। इस चुनौती से निपटने के लिए केएफडब्ल्यू परियोजना ने जिला कांगड़ा और जिला चंबा में लैंटाना उन्मूलन के लिए उल्लेखनीय कार्य किए हैं।

5,607 हेक्टेयर भूमि से हटाया गया लैंटाना

परियोजना के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों में अब तक 5 हजार 607 हेक्टेयर भूमि से लैंटाना को हटाया गया है। यह कार्य बड़े स्तर पर किया गया, जिससे वन क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने और स्थानीय पौधों को फिर से विकसित होने का अवसर मिला। इतनी बड़ी भूमि से लैंटाना हटाना अपने आप में एक महत्वपूर्ण और सराहनीय उपलब्धि है।

जैव विविधता संरक्षण में मदद

लैंटाना के अत्यधिक फैलाव से जंगलों में उगने वाली देशी प्रजातियों के पौधे नष्ट होने लगते हैं। इसके कारण वन्यजीवों के प्राकृतिक आवास भी प्रभावित होते हैं। केएफडब्ल्यू परियोजना के तहत किए गए उन्मूलन कार्यों से इन क्षेत्रों में स्थानीय वनस्पतियों के पुनर्विकास को बढ़ावा मिला है और जैव विविधता को संरक्षित करने में मदद मिली है।

वन प्रबंधन को मिला नया बल

लैंटाना हटाने के बाद कई क्षेत्रों में पौधरोपण, प्राकृतिक पुनर्जनन और भूमि सुधार के कार्य भी किए गए। इससे जंगलों की गुणवत्ता में सुधार हुआ है और वन प्रबंधन को भी मजबूती मिली है।

स्थानीय लोगों की भागीदारी

इस अभियान में स्थानीय समुदाय की भागीदारी भी महत्वपूर्ण रही। परियोजना से जुड़े लोगों और ग्रामीणों ने लैंटाना हटाने के कार्यों में सक्रिय सहयोग दिया। इससे न केवल पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिलाए बल्कि ग्रामीणों को रोजगार के अवसर भी प्राप्त हुए।

निष्कर्ष

कांगड़ा और चंबा जिलों में केएफडब्ल्यू परियोजना के तहत 5,607 हेक्टेयर भूमि से लैंटाना उन्मूलन का कार्य पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक बड़ी उपलब्धि है। यह पहल न केवल वन क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने में सहायक सिद्ध हुई है, बल्कि भविष्य में सतत वन प्रबंधन और जैव विविधता संरक्षण के लिए भी महत्वपूर्ण आधार तैयार कर रही है।

एकीकृत विकास परियोजना (IDP)

हिमाचल प्रदेश में आईडीपी (Integrated Development Project) का मुख्य उद्देश्य वर्षा-आधारित कृषि को जलवायु के अनुकूल बनाना, वाटरशेड प्रबंधन में सुधार करना और चयनित पंचायतों में उत्पादकता बढ़ाना है। यह विश्व बैंक की सहायता से 2020 में शुरू की गई 5 वर्षीय परियोजना है। यह परियोजना टिकाऊ भूमि/जल प्रबंधन, कृषि विकास, और सामुदायिक क्षमता निर्माण पर केंद्रित है, जिससे किसानों की आय में सुधार हो सके। हिमाचल प्रदेश के जिला किन्नौर और लाहौल-स्पीति को छोड़ शेष 10 जिलों में यह परियोजना कार्य कर रही है। इस परियोजना के अंतर्गत 428 पंचायतें शामिल हैं।

आर. लालनन संगा (भा.व.से)
प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक
आईडीपी

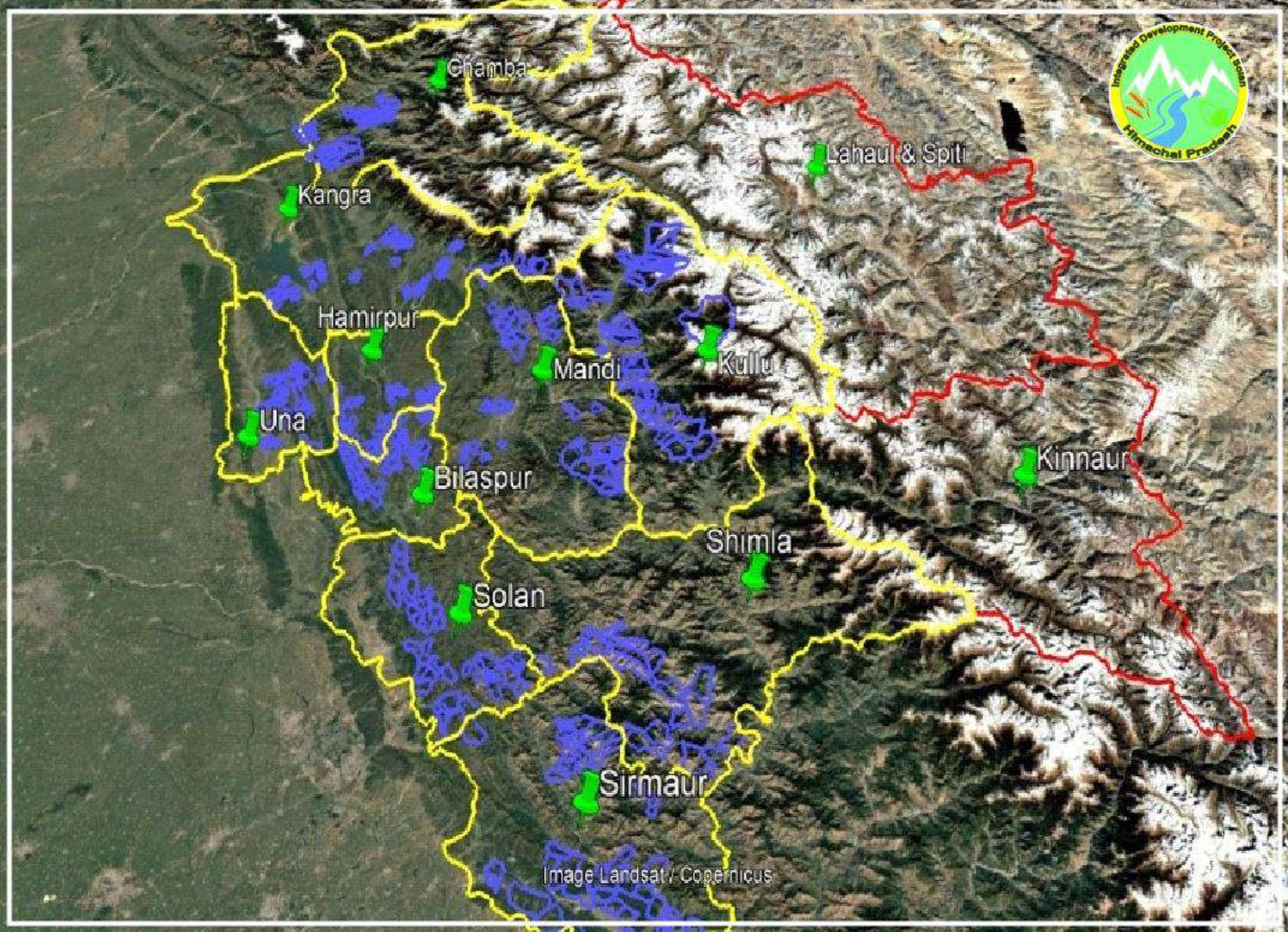

जलवायु अनुकूल वर्षा आधारित कृषि के लिए समेकित विकास परियोजना (IDP)

स्रोत स्थिरता एवं जलवायु अनुकूल वर्षा आधारित कृषि के लिए समेकित विकास परियोजना (Integrated Development Project - IDP) हिमाचल प्रदेश के वन विभाग की विश्व बैंक समर्थित एक महत्वपूर्ण परियोजना है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करते हुए वर्षा आधारित कृषि को मजबूत बनाना और किसानों की आय तथा जल उपयोग दक्षता को बढ़ाना है।

परियोजना की रूपरेखा

इस परियोजना की कुल लागत लगभग 700 करोड़ रुपये है और इसकी अवधि छह वर्ष निर्धारित की गई है। परियोजना पर हस्ताक्षर 11 मार्च 2020 को किए गए थे और यह 28 मई 2020 से प्रभावी रूप से लागू हुई। परियोजना अवधि 2020-21 से 2025-26 तक निर्धारित है।

परियोजना के उद्देश्य

परियोजना के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. हिमाचल प्रदेश के चयनित ग्राम पंचायतों में ऊपरी जलागम (वाटरशेड) प्रबंधन में सुधार करना।
2. चयनित ग्राम पंचायतों में कृषि जल उत्पादकता बढ़ाना और जल संसाधनों का बेहतर उपयोग सुनिश्चित करना।

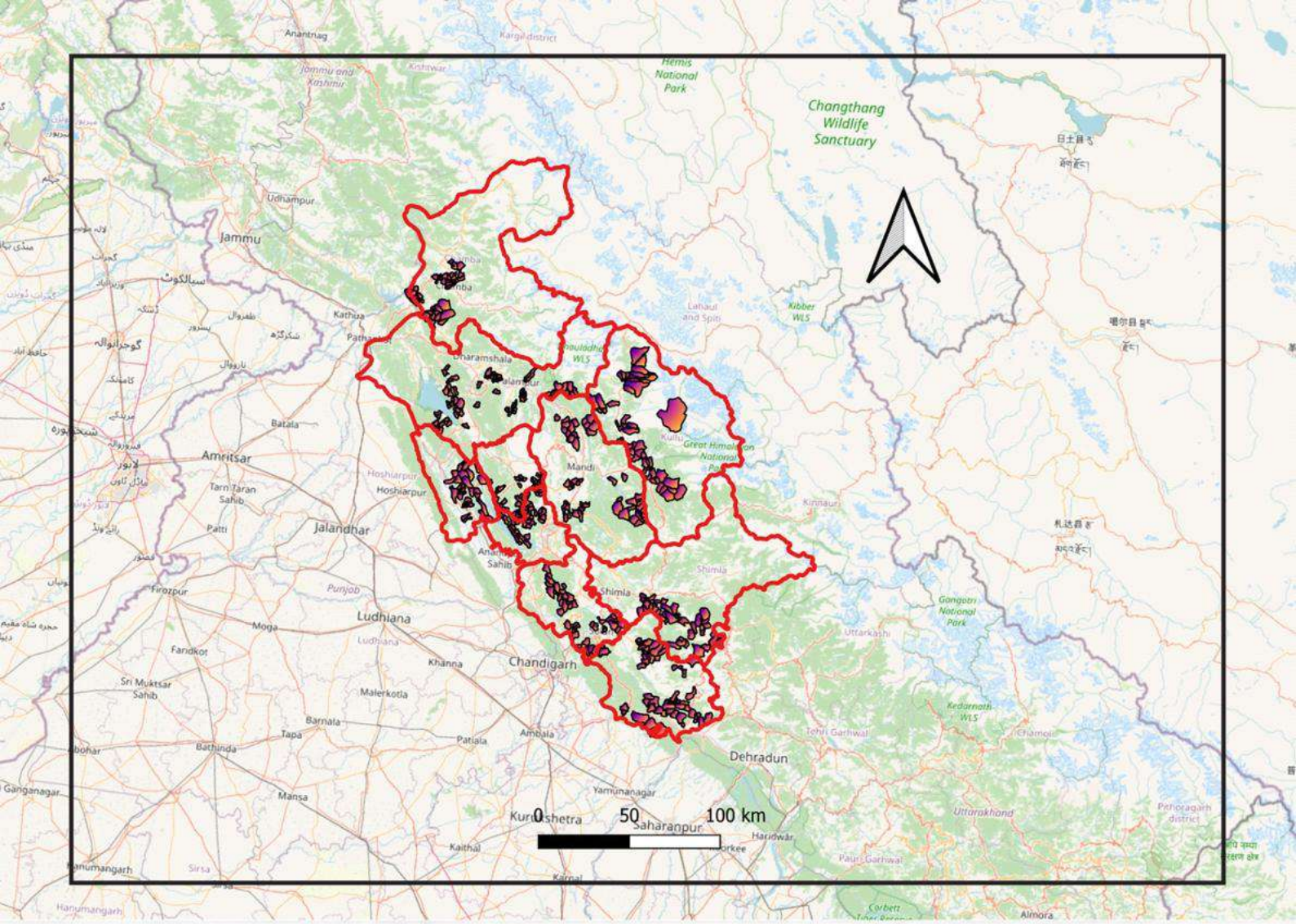

परियोजना का कार्यान्वयन

यह परियोजना बहु-क्षेत्रीय और समेकित दृष्टिकोण पर आधारित है। इसके अंतर्गत कार्यों की योजना और क्रियान्वयन में स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाती है।

- परियोजना सामुदायिक सहभागिता आधारित विकास (Community Driven Development) मॉडल पर कार्य कर रही है।
- कार्यों की योजना ग्राम पंचायतों की भागीदारी से तैयार की जाती है।
- प्रस्तावित योजनाओं को ग्राम सभाओं की स्वीकृति के बाद ही लागू किया जाता है।

परियोजना क्षेत्र

यह परियोजना हिमाचल प्रदेश के 10 जिलों की 428 चयनित ग्राम पंचायतों में लागू की जा रही है। हालांकि, इस परियोजना में किन्नौर और लाहौल-स्पीति जिलों को शामिल नहीं किया गया है।

परियोजना के प्रमुख घटक

परियोजना को चार मुख्य घटकों में विभाजित किया गया है:

1. सतत भूमि एवं जल संसाधन प्रबंधन
2. कृषि उत्पादकता में सुधार और मूल्य संवर्धन
3. संस्थागत विकास
4. परियोजना प्रबंधन

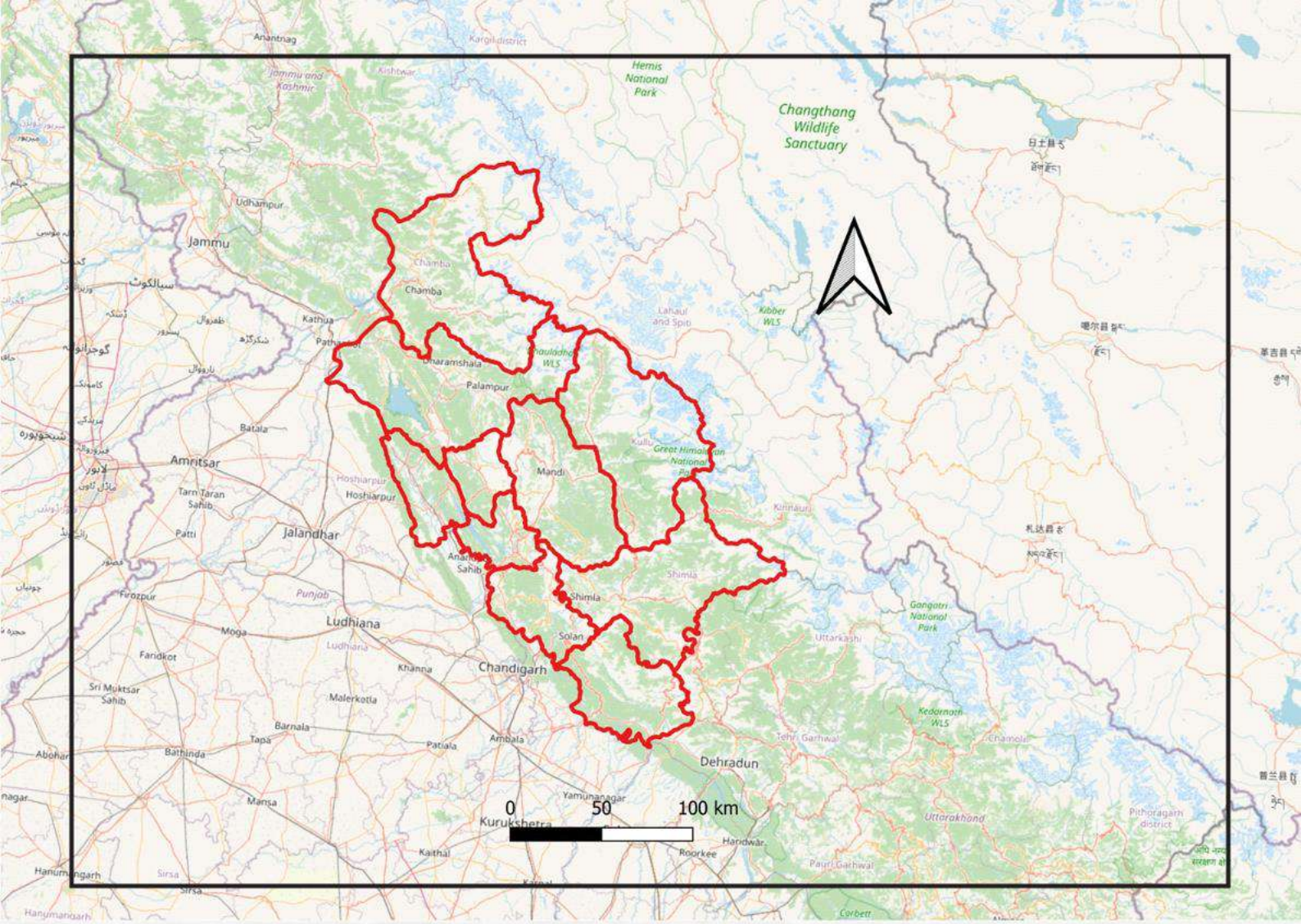

घटक 1 : सतत भूमि एवं जल संसाधन प्रबंधन

इस घटक के अंतर्गत प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और जल स्रोतों के पुनर्जीवन के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए गए हैं।

- पौधरोपणः लगभग 7050 हेक्टेयर क्षेत्र में पौधरोपण किया गया।

- **मिट्टी एवं जल संरक्षणः**
  - कंटूर ट्रेंचिंग - 5710.50 हेक्टेयर
  - घास बोवाईध्रोपण - 5255.50 हेक्टेयर

- **ड्रेनेज लाइन ट्रीटमेंटः**
  - वनस्पतिक चेक बैरियर - 49,867 रनिंग मीटर
  - ड्राई स्टोन चेक बैरियर - 1,76,140 घन मीटर
  - क्रेट वायर चेक बैरियर - 1,15,687 घन मीटर
  - सीमेंट कंक्रीट चेक बैरियर - 20,564 घन मीटर
- झरना (स्प्रिंग) विकासः लगभग 476 जल स्रोतों का पुनर्जीवन किया गया।
- विदेशी आक्रामक प्रजातियों का प्रबंधनः परियोजना क्षेत्र में 6481.95 हेक्टेयर भूमि से लैंटाना हटाया गया।
- जल संचयन संरचनाएँः लगभग 2000 जल संचयन ढांचे बनाए गए, जिनकी कुल जल संग्रहण क्षमता लगभग 4.5 लाख क्यूबिक मीटर है।

- वन अग्नि प्रबंधनः समुदाय में जागरूकता के लिए 357 से अधिक जागरूकता शिविर आयोजित किए गए।

घटक 2 : कृषि उत्पादकता में सुधार और मूल्य संवर्धन

इस घटक का उद्देश्य किसानों को आधुनिक तकनीक और बेहतर सिंचाई सुविधाओं से जोड़ना है।

- जल वितरण एवं उपयोग दक्षता:
  - 3149 माध्यमिक जल टैंक और कुणालों का निर्माणध्सुधार किया गया, जिससे लगभग 1200 हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई क्षमता विकसित हुई।
  - 3000 से अधिक जल उपयोगकर्ता समूह बनाए गएए जिनमें लगभग 21,000 सदस्य शामिल हैं।
- जलवायु अनुकूल कृषि का प्रदर्शन:
  - लगभग 3000 प्रदर्शन कार्यक्रम और फार्मर फील्ड स्कूल आयोजित किए गए।
- कृषि एवं संबद्ध गतिविधियों के लिए सहायता:
  - 15,210 किसानों और 325 किसान समूहों को जलवायु अनुकूल कृषि उपकरणों के लिए अनुदान दिया गया।
  - इनमें ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली, पावर टिलर आदि उपकरण शामिल हैं।
  - कुल अनुदान का लगभग 65 प्रतिशत कमजोर वर्गों को दिया गया।
  - लगभग 140 हेक्टेयर क्षेत्र को उच्च दक्षता सिंचाई प्रणाली के अंतर्गत लाया गया।
- पैदल पुलों का निर्माण: परियोजना क्षेत्र में 364 फुट ब्रिज बनाए गए, जिससे ग्रामीणों की आवाजाही और कृषि गतिविधियों में सुविधा मिली।

घटक 3 : संस्थागत विकास

इस घटक के अंतर्गत क्षमता निर्माण और जागरूकता पर विशेष ध्यान दिया गया।

- प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण कार्यक्रम
- कृषि विज्ञान केंद्रों और तकनीकी विश्वविद्यालयों के अध्ययन भ्रमण
- किसान प्रशिक्षण, फील्ड डे और एक्सपोजर विजिट

मैचिंग ग्रांट योजना

इस योजना के माध्यम से किसानों को जलवायु अनुकूल कृषि उपकरण खरीदने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

- आवेदन चयन के लिए पारदर्शी प्रणाली
- 90 दिनों के भीतर अनुदान वितरण
- शिकायत निवारण प्रणाली
- ग्राम पंचायतए महालेखा परीक्षक और स्वतंत्र चार्टर्ड अकाउंटेंट द्वारा ऑडिट व्यवस्था

लाभार्थियों तक पहुंच

परियोजना के माध्यम से अब तक लगभग 1.9 लाख लोगों तक विभिन्न योजनाओं और गतिविधियों का लाभ पहुंचाया गया है। इनमें किसान, महिला समूह, जल उपयोगकर्ता समूह, प्रशिक्षण प्राप्त ठेकेदार और किसान फील्ड स्कूल के सदस्य शामिल हैं।

तकनीकी सहयोग और अध्ययन

परियोजना ने कई प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ मिलकर तकनीकी अध्ययन और अनुसंधान भी किए हैंए जिनमें प्रमुख हैं-

- आईआईटी MUMBAI आईआईटी मंडी और एनआईटी हमीरपुर द्वारा ग्राम पंचायत स्तर पर जल बजटिंग और हाइड्रोलॉजिकल मॉडलिंग।

- प्रोजेक्ट मैनेजमेंट इंफॉर्मेशन सिस्टम (PMIS) का विकास।
- भारतीय वन प्रबंधन संस्थान, भोपाल द्वारा वन पारिस्थितिकी सेवाओं का ग्रीन अकाउंटिंग अध्ययन।
- म्तदेज - Ernst & Young (EY) द्वारा वानिकी क्षेत्र की कार्यप्रणाली की समीक्षा।
- हिमालयन फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट (HFRI) द्वारा वन बीज प्रबंधन अध्ययन।
- Dr. YS Parmar बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय द्वारा चीड़ की सुइयों से ब्रिकेट बनाकर वन आग प्रबंधन।
- केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान (CPRI) द्वारा आलू बीज उत्पादन के क्षेत्रीय प्रदर्शन।

निष्कर्ष

स्रोत स्थिरता एवं जलवायु अनुकूल वर्षा आधारित कृषि के लिए समेकित विकास परियोजना हिमाचल प्रदेश में प्राकृतिक संसाधन संरक्षण, जल प्रबंधन और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। यह परियोजना न केवल पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे रही है, बल्कि किसानों की आय बढ़ाने, जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने और ग्रामीण विकास को गति देने में भी अहम भूमिका निभा रही है।

जल संकट से जल सुरक्षा तक सोलन जिले के मनलोग-कलां में जलवायु अनुकूल कृषि की सफल कहानी

विश्व बैंक समर्थित हिमाचल प्रदेश समेकित विकास परियोजना (HIDP) के तहत राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में जलवायु अनुकूल बुनियादी ढांचे, बेहतर जल प्रबंधन और मजबूत कृषि प्रणाली के माध्यम से व्यापक परिवर्तन लाया जा रहा है। इस परियोजना का उद्देश्य जल सुरक्षा बढ़ाना, उच्च मूल्य वाली कृषि को प्रोत्साहित करना और किसानों को जलवायु अनुकूल आजीविका अपनाने के लिए सक्षम बनाना है।

इस परिवर्तन का एक प्रेरणादायक उदाहरण सोलन जिले के मनलोग-कलां गांव में देखने को मिलता है, जहां परियोजना के समेकित प्रयासों ने एक जलवायु-संवेदनशील कृषि समुदाय को जलवायु अनुकूल कृषि विकास के मॉडल में बदल दिया है।

गांव की पृष्ठभूमि

मनलोग-कलां ग्राम पंचायत जिला मुख्यालय से लगभग 80 किलोमीटर दूर स्थित है। यहां लगभग 236 परिवारों के 1,271 लोग रहते हैं और पंचायत का कुल क्षेत्रफल लगभग 700 हेक्टेयर है।

परियोजना के हस्तक्षेप से पहले यहां की कृषि पूरी तरह वर्षा पर निर्भर थी। थोड़े समय के सूखे से भी फसलें प्रभावित हो जाती थीं। सीमित सिंचाई सुविधाओं के कारण किसान केवल कम उत्पादन वाली पारंपरिक खेती तक सीमित थे। इसके अलावा जंगली जानवरों द्वारा फसलों को नुकसान पहुंचाने की समस्या भी गंभीर थी, जिसके कारण किसान उच्च मूल्य वाली फसलों को अपनाने से हिचकिचाते थे।

इन परिस्थितियों के कारण कृषि भूमि का पूरा उपयोग नहीं हो पाता था और कई परिवारों को खेती के साथ-साथ दिहाड़ी मजदूरी पर निर्भर रहना पड़ता था। जलवायु परिवर्तन और घटती वर्षा ने इस समस्या को और बढ़ा दिया था।

जल सुरक्षा के लिए समेकित रणनीति

यह समझते हुए कि जल सुरक्षा ही जलवायु अनुकूल कृषि की आधारशिला है, HIDP ने गांव में जल संरक्षण, सिंचाई विकास और सामुदायिक संसाधन प्रबंधन पर आधारित एक व्यापक रणनीति लागू की।

परियोजना के तहत प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन समितियां (NRMCs) बनाई गईं, ताकि बनाई गई संरचनाओं का सही संचालन और रखरखाव सुनिश्चित हो सके।

इसके अलावा 16 जल उपयोगकर्ता समूह (Water User Groups) बनाए गएए जो किसानों के बीच सिंचाई जल के समान वितरण और सामूहिक प्रबंधन को सुनिश्चित करते हैं।

महिलाओं की बढ़ती भागीदारी

परियोजना के तहत महिलाओं की भागीदारी को भी विशेष महत्व दिया गया। विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों और जागरूकता गतिविधियों के माध्यम से 13 महिलाओं को सामुदायिक संस्थाओं और संसाधन प्रबंधन में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए सशक्त बनाया गया। इससे गांव में पारदर्शिता और सामूहिक जिम्मेदारी की भावना मजबूत हुई।

जल संचयन और सिंचाई ढांचे का विकास

गांव में जल उपलब्धता बढ़ाने के लिए कई जल संचयन संरचनाएं विकसित की गईं।

- स्थानीय नालों और जलधाराओं में 2 मैसनरी चेक डैम और 4 क्रेट वायर बैरियर बनाए गए, जिनकी कुल जल भंडारण क्षमता लगभग 387 घन मीटर है।
- इसके अलावा 5 लिफ्ट सिंचाई योजनाएं (236 घन मीटर क्षमता) स्थापित की गईं।
- 8 ग्रेविटी आधारित सिंचाई प्रणालियां बनाई गईं, जिनकी कुल भंडारण क्षमता 400 घन मीटर है।
- जल वितरण को बेहतर बनाने के लिए 7 जल भंडारण टैंक भी बनाए गए।

इन सभी प्रयासों से गांव में सिंचाई जल की उपलब्धता काफी बढ़ी और किसान अब सूखे के दौर में भी अपनी फसलों की बेहतर योजना बना पा रहे हैं।

पर्यावरण संरक्षण और लैंटाना उन्मूलन

परियोजना के तहत खेतों के आसपास लैंटाना कैमारा जैसी आक्रामक प्रजाति को हटाया गया। इससे जंगली जानवरों के खेतों में आने की समस्या कम हुई और फसलों को होने वाला नुकसान घटा। साथ ही स्थानीय वनस्पतियों और चारे की प्रजातियों को पुनर्जीवित होने का अवसर मिला, जिससे जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र को भी लाभ हुआ।

उच्च दक्षता सिंचाई प्रणाली

गांव में लगभग 2.24 हेक्टेयर क्षेत्र में ड्रिप और स्प्रिंकलर जैसी उच्च दक्षता सिंचाई प्रणाली (HEIS) स्थापित की गई। इससे किसानों को कम पानी में अधिक उत्पादन करने की सुविधा मिली और **कम पानी में अधिक फसल** का सिद्धांत व्यवहार में लागू हुआ।

प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण

परियोजना ने किसानों के ज्ञान और कौशल को बढ़ाने पर भी विशेष जोर दिया।

- किसानों के एक्सपोजर विजिट आयोजित किए गए
- कृषि विज्ञान केंद्र कंडाघाट में प्रशिक्षण दिए गए
- सीएसके हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर सहित अन्य संस्थानों के साथ सीखने के अवसर प्रदान किए गए

गांव में नियमित रूप से सब्जी उत्पादन के प्रदर्शनए कृषि शिविर और वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें किसानों को मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, फसल विविधीकरण, कीट प्रबंधन और आधुनिक कृषि तकनीकों की जानकारी दी गई।

शिव शक्ति जल उपयोगकर्ता समूह की पहल

मनलोग-कलां पंचायत के चस्कर और परला चस्कर गांवों के किसानों ने मिलकर शिव शक्ति जल उपयोगकर्ता समूह बनाया, जिसमें 24 सदस्य शामिल हैं।

परियोजना के तहत चस्कर नाला पर सीमेंट कंक्रीट जल संचयन संरचना से जुड़ी लिफ्ट सिंचाई प्रणाली स्थापित की गई, जिससे क्षेत्र में सिंचाई जल की उपलब्धता में उल्लेखनीय सुधार हुआ।

किसान जगत राम की सफलता

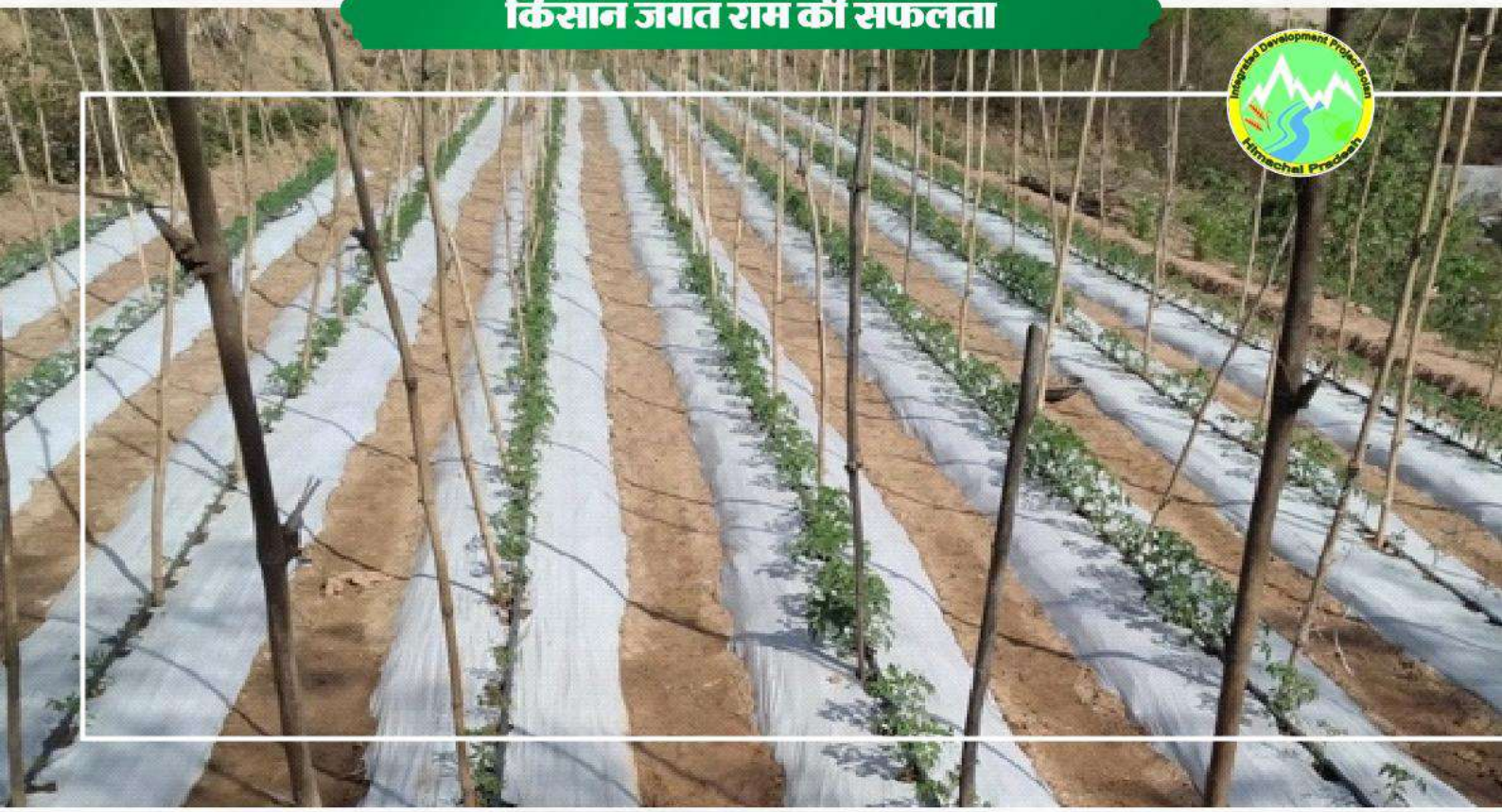

किसान जगत राम, जिनके पास लगभग 5 बीघा भूमि है, पहले पूरी तरह वर्षा आधारित खेती करते थे। सिंचाई सुविधा मिलने के बाद उन्होंने टमाटर, शिमला मिर्च, मटर और फूलगोभी जैसी सब्जियों की खेती शुरू की।

परियोजना के सहयोग से उन्होंने 0.08 हेक्टेयर क्षेत्र में ड्रिप सिंचाई और मल्चिंग प्रणाली अपनाई, जिससे पानी की बचत और उत्पादन दोनों बढ़े।

साथ ही उन्होंने 0.04 हेक्टेयर अतिरिक्त भूमि को भी खेती के अंतर्गत लाया। अब उनकी सब्जी उत्पादन मात्रा 90-100 क्रेट से बढ़कर 120-130 क्रेट प्रति फसल चक्र हो गई है, जिससे उनकी आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

जगत राम कहते हैं -

"पहले हम पूरी तरह बारिश पर निर्भर थे, जिससे खेती अनिश्चित रहती थी। अब सिंचाई सुविधा मिलने से हम सब्जियां उगा रहे हैं और बेहतर आय कमा रहे हैं।"

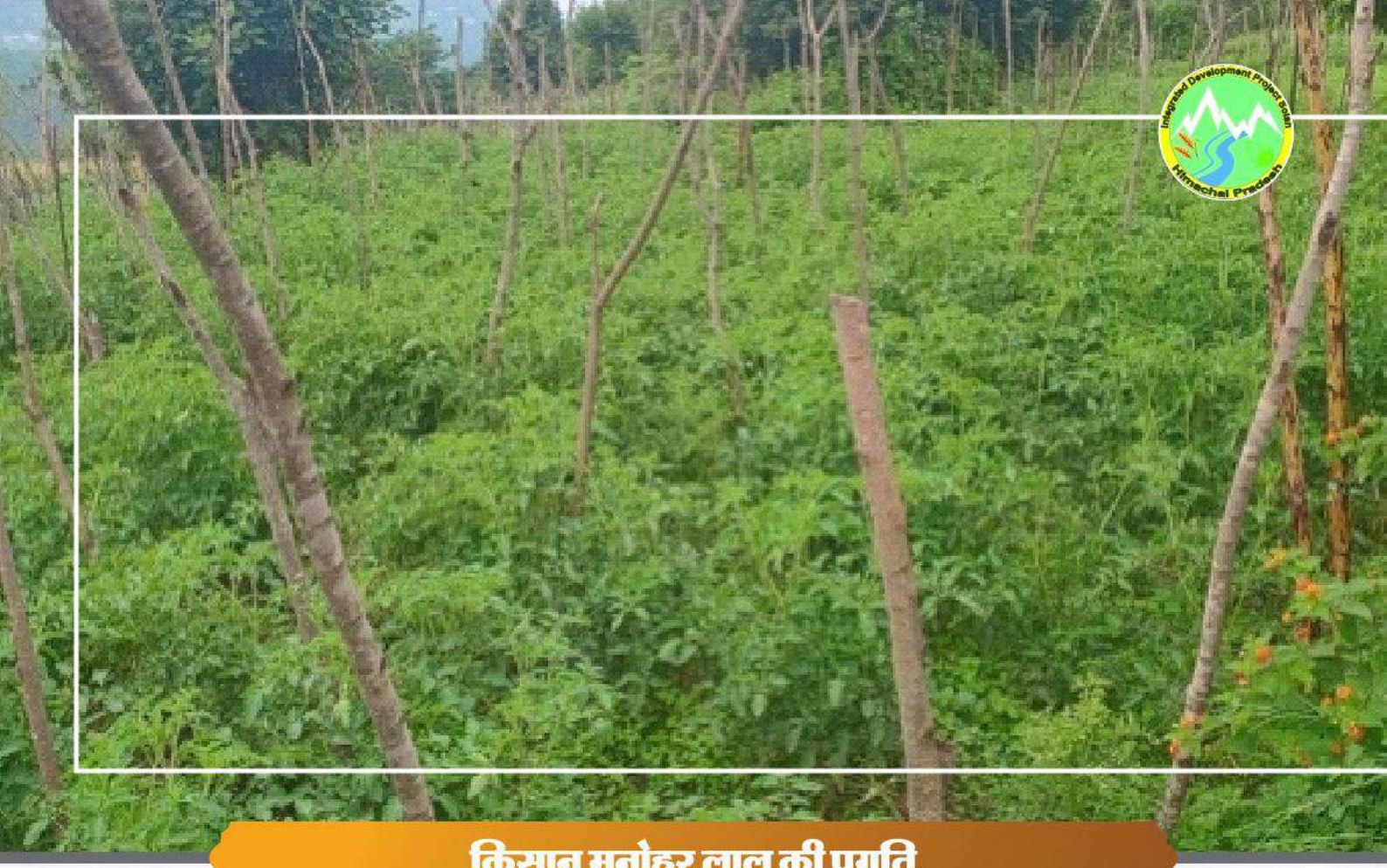

किसान मनोहर लाल की प्रगति

परला चस्कर के किसान मनोहर लाल भी पहले वर्षा आधारित खेती पर निर्भर थे। परियोजना के तहत 50,000 लीटर क्षमता वाला लिफ्ट सिंचाई टैंक बनने के बाद उन्होंने 0.04 हेक्टेयर बंजर भूमि पर पहली बार टमाटर की खेती शुरू की।

बेहतर जल उपलब्धता के कारण उन्होंने अपने फसल चक्र में भी बदलाव किया-

- खरीफ सीजनः जुलाई-नवंबर से बदलकर अप्रैल-अगस्त
- रबी सीजनः दिसंबर-मई से बदलकर अक्टूबर-मार्च

इस बदलाव से उन्हें बाजार में जल्दी पहुंचने और बेहतर दाम मिलने लगे।

KVK कंडाघाट में जलवायु अनुकूल कृषि प्रशिक्षण लेने के बाद उन्होंने मृदा परीक्षण आधारित खेती, मल्चिंग शीट और आधुनिक तकनीकों को भी अपनाया।

प्राकृतिक खेती की ओर कदम

कुछ किसानों ने एक्सपोजर विजिट के दौरान प्राकृतिक खेती की तकनीकों के बारे में भी सीखा। उन्होंने जीवामृतए घन जीवामृत, मल्चिंग और जैविक पोषक प्रबंधन जैसी विधियों का प्रयोग शुरू किया, जिससे खेती की लागत कम हुई और मिट्टी की गुणवत्ता बेहतर हुई।

निष्कर्ष

आज मनलोग-कलां गांव जलवायु अनुकूल कृषि विकास का एक आदर्श मॉडल बनकर उभरा है। बेहतर जल उपलब्धताए आधुनिक सिंचाई प्रणाली और किसानों की क्षमता वृद्धि ने यहां की खेती को आत्मनिर्भर और लाभकारी बना दिया है।

किसान अब उच्च मूल्य वाली सब्जी खेती कर रहे हैं, बाजार तक जल्दी पहुंच पा रहे हैं और अपनी आय में वृद्धि कर रहे हैं। साथ ही महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने सामुदायिक संस्थाओं को भी मजबूत बनाया है।

मनलोग-कलां की यह कहानी दर्शाती है कि समेकित जल प्रबंधनए सामुदायिक भागीदारी और तकनीकी प्रशिक्षण के माध्यम से हिमाचल प्रदेश में जलवायु अनुकूल कृषि और टिकाऊ ग्रामीण आजीविका को सफलतापूर्वक विकसित किया जा सकता है।

वर्षा जल संचयन से जलवायु अनुकूल कृषि तक

चंबा जिले के लाडोह गांव में किसानों की आजीविका में सकारात्मक बदलाव

हिमालयी क्षेत्र के ग्रामीण समुदाय आज जलवायु परिवर्तन, अनियमित वर्षा और घटती जल उपलब्धता जैसी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इन परिस्थितियों का सीधा प्रभाव कृषि उत्पादन और ग्रामीण आजीविका पर पड़ता है।

इन्हीं चुनौतियों से निपटने के लिए विश्व बैंक समर्थित हिमाचल प्रदेश समेकित विकास परियोजना(HPIDP) राज्य में जल सुरक्षा को मजबूत करने, जलवायु अनुकूल कृषि को बढ़ावा देने और किसानों की आजीविका सुधारने के उद्देश्य से कार्य कर रही है।

इस परियोजना के माध्यम से चंबा जिले की ग्राम पंचायत भनोटा के लाडोह गांव में एक सरल लेकिन प्रभावी वर्षा जल संचयन पहल ने किसानों की जिंदगी में उल्लेखनीय परिवर्तन लाया है।

गांव की पृष्ठभूमि

ग्राम पंचायत भनोटा जिला मुख्यालय चंबा से लगभग 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और समुद्र तल से लगभग 887 मीटर की ऊंचाई पर बसा हुआ है। यहां अधिकांश परिवारों की आजीविका का मुख्य आधार कृषि है।

हालांकि, गांव में सिंचाई सुविधाओं की कमी और वर्षा की अनिश्चितता के कारण कृषि लंबे समय से प्रभावित होती रही। किसान मुख्य रूप से वर्षा आधारित खेती पर निर्भर थे, जिसके कारण फसल चयन सीमित था और उत्पादन भी कम रहता था। परिणामस्वरूप खेती मुख्यतः आत्मनिर्भर कृषि तक सीमित थी, जिसमें फसलें केवल घरेलू उपयोग के लिए उगाई जाती थीं।

किसान विशाल कुमार की कहानी

इसी गांव के निवासी विशाल कुमार, जो 31 जुलाई 2021 को अर्धसैनिक बलों से सेवानिवृत्त होकर अपने पैतृक गांव लौटे, ने कृषि के माध्यम से अपने परिवार की आजीविका मजबूत करने का निर्णय लिया।

वे लगभग 2 बीघा भूमि पर गेहूं और मक्की की खेती करते थे, लेकिन सिंचाई सुविधा के अभाव में खेती पूरी तरह वर्षा पर निर्भर थी। पानी की कमी के कारण फसल उत्पादन सीमित था और अधिकांश उपज घरेलू उपयोग में ही चली जाती थी।

समाधान की तलाश

गांव में सिंचाई की समस्या को देखते हुए विशाल कुमार और अन्य ग्रामीणों ने HPIDP परियोजना इकाई, चंबा से संपर्क किया। परियोजना टीम ने गांव का दौरा कर जल संसाधनों की स्थिति का आकलन किया।

जांच में पाया गया कि गांव में कोई स्थायी सिंचाई स्रोत उपलब्ध नहीं था, जिससे कृषि वर्षा की अनिश्चितता पर निर्भर रहती थी। हालांकि, यह भी देखा गया कि कई घरों की छतों से गिरने वाले वर्षा जल को एकत्र कर कृषि कार्यों के लिए उपयोग किया जा सकता है।

सामुदायिक पहल और वर्षा जल संचयन

परियोजना टीम द्वारा आयोजित सामुदायिक बैठकों में ग्रामीणों ने जल संकट के समाधान पर चर्चा की। इसी प्रक्रिया के दौरान छत से वर्षा जल संग्रहण टैंक बनाने का विचार सामने आया।
गांव के 12 परिवारों में से 5 परिवारों ने मिलकर इस पहल में भाग लेने की सहमति दी, जिससे सामुदायिक सहयोग की भावना स्पष्ट हुई।

परियोजना के सहयोग से **ज्वाला माता जल उपयोगकर्ता समूह** का गठन किया गया, जिसमें पांच सदस्य शामिल हैं। यह समूह जल संचयन प्रणाली के संचालन और रखरखाव की जिम्मेदारी संभालता है।

वर्षा जल संचयन टैंक का निर्माण

HPIDP परियोजना के तहत वर्ष 2023-24 में 30 घन मीटर क्षमता वाला छत आधारित वर्षा जल संचयन टैंक बनाया गया।

यह टैंक घरों की छतों से गिरने वाले वर्षा जल को एकत्र कर उसे सिंचाई के लिए सुरक्षित रखता है। यह छोटा लेकिन प्रभावी निवेश सूखे के समय कृषि के लिए पानी उपलब्ध कराने में सहायक सिद्ध हुआ और वर्षा की अनिश्चितता से गांव की निर्भरता कम हुई।

प्रशिक्षण और जलवायु अनुकूल कृषि

परियोजना ने केवल बुनियादी ढांचा निर्माण तक ही सीमित न रहकर किसानों के प्रशिक्षण और क्षमता विकास पर भी विशेष ध्यान दिया।

किसानों को आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में जलवायु अनुकूल कृषि तकनीकों की जानकारी दी गई और उन्हें फसल विविधीकरण के लिए प्रेरित किया गया।

परियोजना के तहत शिमला मिर्च और टमाटर की खेती के प्रदर्शन प्लॉट भी स्थापित किए गए जिससे किसानों को सब्जी उत्पादन के लाभ और आधुनिक कृषि तकनीकों की समझ मिली।

फसल विविधीकरण की ओर कदम

सिंचाई सुविधा मिलने और प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद विशाल कुमार ने अपनी खेती में महत्वपूर्ण बदलाव किए। अब उनकी 2 बीघा भूमि में से लगभग 1 बीघा भूमि पर सब्जियों की खेती की जा रही है।

वर्तमान में वे मक्की, शिमला मिर्च, खीरा, टमाटर, लहसुन, फूलगोभी, पत्तागोभी और मूली जैसी विभिन्न फसलें उगा रहे हैं। इससे खेती अधिक लाभकारी और विविधतापूर्ण बन गई है।

आय में उल्लेखनीय वृद्धि

वर्षा जल संचयन टैंक बनने से पहले विशाल कुमार की कृषि आय बहुत कम थी और खेती मुख्यतः घरेलू उपयोग तक सीमित थी, लेकिन सिंचाई सुविधा और आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने के बाद उनकी वार्षिक कृषि आय बढ़कर लगभग 1,79,800 रुपये हो गई है।

भविष्य की योजनाएं

सब्जी उत्पादन में सफलता से उत्साहित होकर विशाल कुमार अब ड्रिप सिंचाई प्रणाली अपनाने की योजना बना रहे हैं, जिससे पानी का उपयोग और अधिक कुशलता से हो सके।

उन्होंने परियोजना के तहत इसके लिए आवेदन किया है और उनकी योजना को स्वीकृति भी मिल चुकी है। ड्रिप सिंचाई प्रणाली स्थापित होने के बाद वे अपनी पूरी 2 बीघा भूमि पर सब्जी उत्पादन करने और कुछ परती भूमि को भी खेती के अंतर्गत लाने की योजना बना रहे हैं।

किसान की जुबानी

इस परिवर्तन के बारे में विशाल कुमार कहते हैं

"पहले पानी की कमी हमारी सबसे बड़ी समस्या थी। आज हम वर्षा जल को संग्रहित करके खेती में उपयोग कर रहे हैं। इससे हमें अधिक फसल उगाने और बेहतर आय अर्जित करने का अवसर मिला है।"

निष्कर्ष

लाडोह गांव की यह कहानी दर्शाती है कि सामुदायिक सहभागिता, सामाजिक जागरूकता और छोटे स्तर के जलवायु अनुकूल ढांचागत निवेश भी ग्रामीण क्षेत्रों में बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं।

यह पहल साबित करती है कि यदि जल प्रबंधन, तकनीकी प्रशिक्षण और सामुदायिक सहयोग को साथ लेकर काम किया जाए, तो पहाड़ी क्षेत्रों में भी जलवायु अनुकूल कृषि और टिकाऊ ग्रामीण आजीविका को सफलतापूर्वक विकसित किया जा सकता है।

विकास के पथ पर चलता रहे वानिकी परियोजनाओं का रथ

हिमाचल प्रदेश में वन विभाग के अंतर्गत चल रही बाह्य वित्त पोषित तीन महत्वाकांक्षी परियोजनाओं के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में जो विकास कार्य हुए हैं, जो अनके मायनों में अभूतपूर्व है। हिमाचल जैसे पहाड़ी राज्य के लिए बाह्य वित्त पोषित परियोजनाएं मिली तो वन विभाग ने कई चुनौतियों के साथ लक्ष्य को भी पूरा किया। हालांकि इन परियोजनाओं के तहत अच्छे से अच्छे कार्य हुए, लेकिन कहीं न कहीं कमियां भी रह गई होगी। सिलसिलेवार इन परियोजनाओं के बारे जिक्र करें तो सबसे बड़ा प्रोजेक्ट 800 करोड़ की जाइका वानिकी परियोजना, 700 करोड़ की आईडीपी और 310 करोड़ की केएफडब्ल्यू परियोजना। यानी कुल मिलाकर वन विभाग के खाते में 1810 करोड़ की परियोजनाएं मिली।

जाइका वानिकी परियोजना प्रबंधन ने कई चुनौतियों के साथ 22 वन मंडलों के ग्रामीण क्षेत्रों में 460 ग्राम वन विकास समितियां और 920 स्वयं सहायता समूहों का गठन किया, तो वहां के लोगों के लिए स्वरोजगार के द्वार भी खोल दिए। आज 10 हजार से अधिक लोग आजीविका सुधार कर अपनी आर्थिकी को मजबूत कर रहे हैं। हिमाचल प्रदेश में ग्रीन कवर बढ़ाने के लिए यह परियोजना विभाग और जन सहभागिता के साथ खड़ी रही और आज 8300 हैक्टेयर भूमि पर जलवायु के मुताबिक भिन्न-भिन्न प्रजातियों के पौधे रोपे गए।

दुर्लभ प्रजाति भोजपत्र के पौधे रोपने और औषधीय पौधों की खेती के प्रति लोगों को जागरूक करने में सफलता मिली, तो मुख्यमंत्री वन विस्तार योजना के अंतर्गत 124 हैक्टेयर बंजर भूमि पर पौधे रोपने में भी इस परियोजना ने सराहनीय कार्य किए। मई 2025 में जाइका इंडिया की टीम मध्यावधि समीक्षा के लिए हिमाचल दौरे पर आई तो यहां की गतिविधियों को देख परियोजना प्रबंधन की सराहना की।

परियोजना प्रबंधन इस परियोजना की अवधि 2028 तक है। जिस गति एवं लक्ष्य से आजीविका सुधार, वन संरक्षण और जैव विविधता के क्षेत्र में कार्य हुए हैं, इसे देखते हुए इस परियोजना को 2028 के बाद भी दूसरे चरण के लिए विस्तार मिलने की उम्मीदें बढ़ गई हैं। हिमाचल प्रदेश की जनता और वन विभाग को जाइका इंडिया से आस है कि दूसरे चरण के लिए भी विकास के पथ पर जाइका वित्त पोषित परियोजना का रथ चलता रहे।

भविष्य में संभावनाएं:

जाइका वानिकी परियोजना जो कि 2018 से 2028 तक कार्यांवित हो रही है, इसे वृहत रूप दिया जाना अपेक्षित है। अभी तक हिमाचल प्रदेश में मात्र 7 जिलों के 22 वन मंडलों में केवल 460 गावों में चल रही है। इस परियोजना की सफलता को देखते हुए इसे सम्पूर्ण हिमाचल में लागू किया जा सकता है। इस परियोजना के सम्पूर्ण हिमाचल में लागू होने से हिमाचल प्रदेश के लगभग सभी ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार के माध्यम से लोगों की आय में बढ़ोतरी होगी तथा वन एवं पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक सार्थक पहल सिद्ध होगी। इस परियोजना के माध्यम से वन एवं संरक्षण में सामाजिक सहभागिता सुनिश्चित होगी। इस परियोजना के अंतर्गत हिमाचल प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में ईको टूरिज्म, ऐतिहासिक देव वनों के संरक्षण, अनेक आय सृजन की गतिविधियों के माध्यम से प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा मजबूत होगी। जाइका वानिकी परियोजना स्वयं सहायता समूहों एवं ग्रामीण वन विकास समितियों के माध्यम से कार्य कर रही है।

जिसमें अब तक 90 प्रतिशत से अधिक महिलाओं की सहभागिता रही है। इस परियोजना के भविष्य में सुचारू रहने से महिलाओं की सहभागिता बढ़ेगी तथा उनकी आर्थिकी भी मजबूत होगी। यह परियोजना हिमाचल के वन अच्छादित क्षेत्र को 32 प्रतिशत बढ़ाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी।

आईडीपी प्रोजेक्ट:

वन विभाग के अंतर्गत दूसरा सबसे बड़ा प्रोजेक्ट विश्व बैंक सहायता 700 करोड़ की आईडीपी प्रोजेक्ट हिमाचल प्रदेश की 428 ग्राम पंचायतों में ऊपरी जलागम (वाटरशेड) प्रबंधन में सुधार कर रही है। इसके साथ-साथ यह परियोजना कृषि जल उत्पादकता बढ़ाना और जल संसाधनों का बेहतर उपयोग सुनिश्चित करवा रही है। इस परियोजना के माध्यम ने प्रदेश के 10 जिलों में ऐसे कार्य हुए जिसका सीधा लाभ किसान एवं बागवानों को मिला। राज्य के ऐसे कई दुर्गम क्षेत्र हैं जो पहले सिंचाई के लिए पानी की कमी होती थी, मगर इस परियोजना के आने से बंजर धरती पर किसानों ने अपनी फसलें उगाई और उनकी आर्थिकी में भी मजबूती आई। इस परियोजना की अवधि मार्च 2026 तक है, लेकिन ऐसे किर्तिमान कार्यों को देखते हुए इस परियोजना को आगे बढ़ाने के लिए वन विभाग और राज्य सरकार को ठोस कदम उठाने की जरूरत है।

भविष्य की संभावनाएं:

हिमाचल प्रदेश के 10 जिलों में आईडीपी प्रोजेक्ट 2020 से 2026 तक कार्यांवित की गई। इस परियोजना की सफल गतिविधियों पर गौर करें तो राज्य के ऐसे क्षेत्र जहां किसान सिंचाई के लिए वर्षा जल पर ही निर्भर हुआ करते थे, मगर यह परियोजना किसानों के लिए राहत लेकर आई। प्रदेश की 428 ग्राम पंचायतों में वाटरशैड परियोजना सफलता पूर्वक चल रही है। जिससे अब किसानों को सिंचाई के लिए भरपूर पानी मिल रहा है।

आज ये किसान बंजर भूमि पर कीमती फसल पैदा कर आर्थिकी को मजबूत कर रहे हैं। भविष्य में भी यह परियोजना सुचारू रहने से प्रदेश के जनजातीय जिला किन्नौर और लाहौल-स्पीति को भी जोड़ा जा सकता है। क्योंकि ये ऐसे जिले हैं जहां पर हमेशा किसान एवं बागवानों को सिंचाई का साधन न मिलने से परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए आईडीपी परियोजना को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है।

केएफडब्ल्यू:

वन विभाग के अंतर्गत तीसरी योजना 310 करोड़ की केएफडब्ल्यू परियोजना हिमालयी वन पारिस्थितिकी तंत्र एवं ग्रामीण समुदायों को जलवायु परिवर्तन के प्रति अधिक सुदृढ़ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस परियोजना ने हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा और चंबा जिले में वन पुनर्स्थापन, लैंटाना उन्मूलन, जल एवं मृदा संरक्षण, जैव विविधता संरक्षण तथा सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से सतत प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए बेहतरीन कार्य किए। इसके साथ-साथ क्षमता निर्माण एवं वैकल्पिक आजीविका के माध्यम से ग्रामीण आय में वृद्धि का भी लक्ष्य रखती है। जिला कांगड़ा और चंबा जिले के 9 वन मंडलों में लागू इस परियोजना के माध्यम से वन एवं पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में सराहनीय कार्य हुए हैं।

भविष्य की संभावनाएं:

हिमाचल के जिला कांगड़ा और चंबा में वर्ष 2020 से 2026 तक कार्यांवित केएफडब्ल्यू परियोजना का कार्य लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनेक मायनों में अभूतपूर्व रहा। इस परियोजना के माध्यम से लैंटाना उन्मूलन, वन पुनर्स्थापन, जल एवं मृदा संरक्षण, जैव विविधता संरक्षण तथा सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से सतत प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए बेहतरीन कार्य किए। इस परियोजना में सैंकड़ों बेरोजगारों को रोजगार के अवसर मिले, तो वनों के संरक्षण में भी अहम भूमिका निभाई। मार्च 2026 में इसकी अवधि समाप्त हो रही है, मगर इस परियोजना के भविष्य में सुचारू रहने से राज्य के अन्य जिलों में भी क्रियांवित की जा सकती है।

मीडिया में जाइका वानिकी परियोजना

The Summer News Himachal

जाइका इंडिया ने सराहे हिमाचल में वानिकी परियोजना के कार्य
#JICA #India #praised #forestry #project #Himachal #thesummernewshimachal

हिमाचल ने जायका प्रोजेक्ट की एक्सटेंशन मांगी

2028 में होगा पूरा, सरकार चाह रही दो साल और बढ़े परियोजना

चीफ रिपोर्टर–शिमला

सात जिलों में चल रहा है प्रोजेक्ट

यह परियोजना हिमाचल में 460 ग्राम वन विकास समितियों और 920 स्वयं सहायता समूहों को सहायता कर रही है। परियोजना सात जिलों में चल रही है। इसमें किन्नौर, लाहुल-स्पीति, कांगड़ा, बिलासपुर, मंडी, शिमला और कुल्लू शामिल हैं। हिमाचल प्रदेश में आजीविका सुधार, महिला सशक्तिकरण और वन तंत्र प्रबंधन के क्षेत्र में सराहनीय कार्य हो रहे हैं। जायका परियोजना से हिमाचल प्रदेश के वन क्षेत्रों में काफी ज्यादा सुधार हुआ है।

The Tribune

Trending | Videos | India | Opinions | Sports

Home / Himachal Pradesh / Jica Team Arrives For Mid Term R

JICA team arrives for mid-term review of forestry project

TRIBUNE NEWS SERVICE
Shimla, Updated At : 02:30 AM May 08, 2025 IST

शिमला जिले के कोटखाई में होगी औषधीय पौधों की खेती, जाइका वानिकी परियोजना ने जाशला गांव में जताई भरपूर संभावना

By admin

इस वर्ष 1820 हैक्टेयर वन भूमि पर रोपे जाएंगे पौधे, जल्द शुरू होगा राज्य स्तरीय पौधारोपण अभियान

मंडी, 8 मई : जाइका वानिकी परियोजना की मध्यावधि समीक्षा करने के लिए जाइका इंडिया की टीम वीरवार को मंडी जिला के बिहनधार पहुंची। जहां पर परियोजना के कार्यों की समीक्षा की गई। टीम के प्रतिनिधियों ने इस क्षेत्र में हो रहे वानिकी परियोजना के कार्यों की सराहना की। मध्यावधि समीक्षा के मिशन मेंबर एवं जाइका इंडिया के चीफ ऑफ डेवलपमेंट ऑपरेशन्स विनीत सरीन ने यहां ग्राम वन विकास समिति और स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों से सीधा संवाद किया।

mbmnewsnetwork.com

First Verdict

सशक्तिकरण की मिसाल, जाइका वानिकी परियोजना की टीम ने की कार्यों की समीक्षा

By विरेंद्र भारद्वाज – May 8, 2025 No Comments
2 Mins Read

हिमाचल — दैनिक ट्रिब्यून, चंडीगढ़, शुक्रवार, 26 सितंबर, 2025

दुर्लभ प्रजाति भोजपत्र को जिंदा करने में मिली सफलता

हिमाचल में पहली बार जाइका ने रोपे भोजपत्र के 1500 पौधे

शिमला, 25 सितंबर (ट्रिन्यू)

हिमाचल प्रदेश में विलुप्त हो रहे दुर्लभ प्रजाति के पौधे भोजपत्र को जिंदा करने के लिए जाइका वानिकी परियोजना को सफलता मिली है। हिमाचल प्रदेश में पहली बार इस प्रजाति के पौधों की नर्सरी तैयार करने से लेकर पौधारोपण तक सफलता मिली है।

किन्नौर के निचार, तरांडा और जानी में रोपे पांच-पांच सौ पौधे

जाइका वानिकी परियोजना ने हिमालयन फोरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट शिमला के सहयोग से पहली बार भोजपत्र की नर्सरी तैयार करवाई है ताकि इस दुर्लभ प्रजाति एवं सांस्कृतिक पौधों को पुनः रोपित कर उनके प्राकृतिक स्थलों पर पौधरोपण अभियान के माध्यम से लगाया जा सके। इस दिशा में जाइका वानिकी परियोजना बेहतरीन कार्य कर रही है। भोजपत्र की संभावनाओं को देखते हुए जिला किन्नौर में पहली बार 15 सौ पौधे रोपे गए। वन मंडल किन्नौर के अंतर्गत तरांडा, निगुलसरी और जानी में क्रमशः पांच सौ-पांच सौ पौधे भोजपत्र के रोपे गए। भोजपत्र की संभावना के मद्देनजर बृहस्पतिवार को वन परिक्षेत्र निचार स्थित भावानगर में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिमालयन फोरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट शिमला के निदेशक प्रभारी डॉ. संदीप शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. पितांबर नेगी और तकनीकी अधिकारी ज्वाला सिंह ने भोजपत्र के पौधारोपण से लेकर उनके संरक्षण पर विस्तृत जानकारी दी।

प्रदेश में 30 हजार पौधे रोपने का लक्ष्य

जाइका वानिकी परियोजना के जड़ी-बूटी सैल के निदेशक डा. एसके काप्टा ने बताया कि आने वाले समय में इस प्रजाति के पौधों को स्पीति, कुल्लू तथा अन्य प्राकृतिक स्थलों पर रोपित किया जाएगा। इस प्रयास के तहत परियोजना ने 30 हजार पौधे रोपित करने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा कि जाइका वानिकी परियोजना ने पहली बार जिला किन्नौर में 15 सौ पौधे रोपित कर सफलता हासिल की है।

हिमाचल — दैनिक भास्कर, शिमला, शुक्रवार 26 सितंबर, 2025 — 02

दुर्लभ प्रजाति को जिंदा करने में मिली सफलताः किन्नौर के निचार, तरांडा और जानी में लगाए पांच-पांच सौ पौधे, ग्रामीणों को जागरूक किया

हिमाचल में लहराएंगे भोजपत्र के पेड़, जाइका ने किन्नौर में रोपे 1500 पौधे

भास्कर न्यूज | शिमला

विलुप्त हो रहे दुर्लभ प्रजाति के पौधे भोजपत्र को जिंदा करने के लिए जाइका वानिकी परियोजना को हिमाचल प्रदेश में पहली बार सफलता मिली है। इस प्रजाति के पौधों की नर्सरी तैयार करने से लेकर पौधरोपण तक के काम में जाइका सफल रही। इस वानिकी परियोजना ने हिमालयन फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट शिमला के सहयोग से पहली बार भोजपत्र की नर्सरी तैयार करवाई है। इसका उद्देश्य यही है कि इस दुर्लभ प्रजाति एवं सांस्कृतिक पौधों को पुनः रोपित करके उनके प्राकृतिक स्थलों पर पौधरोपण अभियान के माध्यम से लगाया जा सके।

भोजपत्र की संभावनाओं को देखते हुए जिला किन्नौर में पहली बार 1500 पौधे रोपे गए। वन मंडल किन्नौर के अंतर्गत तरांडा, निगुलसरी और जानी में क्रमशः पांच-पांच सौ पौधे लगाए गए। इसी कड़ी में वीरवार को वन परिक्षेत्र निचार स्थित भावानगर में एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिमालयन फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट शिमला के निदेशक प्रभारी डॉ. संदीप शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. पितांबर नेगी और तकनीकी अधिकारी ज्वाला सिंह ने भोजपत्र के पौधरोपण से लेकर उनके संरक्षण पर विस्तृत जानकारी दी।

किन्नौर के भावानगर में भोजपत्र के संबंध में जानकारी के लिए आयोजित कार्यशाला में उपस्थित ग्रामीण।

प्रदेश में 30 हजार पौधे लगाने का लक्ष्य

डॉ. काप्टा जाइका वानिकी परियोजना के जड़ी-बूटी सैल के निदेशक डॉ. एसके काप्टा ने बताया कि आने वाले समय में इस प्रजाति के पौधों को स्पीति, कुल्लू व अन्य प्राकृतिक स्थलों पर रोपित किया जाएगा। इस प्रयास के तहत परियोजना ने 30 हजार पौधे रोपित करने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा कि जाइका वानिकी परियोजना ने पहली बार जिला किन्नौर में 1500 पौधे लगाने में सफलता हासिल की है।

हिमाचल में 74वें वण्यप्राणी सप्ताह का आगाज, वण्य जीवों के संरक्षण का संकल्प

- पीसीसीएफ वाइल्ड लाइफ अमिताभ गौतम ने किया विधिवत शुभारंभ
- स्टेटस ऑफ स्नो लेपर्ड इन हिमाचल-2025 का विमोचन, हिमाचल में 83 बर्फानी तेंदुए
- विडियो कांफ्रेंस के माध्यम से सात दिवसीय कार्यक्रमों पर हुई विस्तार से चर्चा

स्टेटस ऑफ स्नो लेपर्ड इन हिमाचल-2025 का विमोचन

8 अक्तूबर तक इस तरह होंगे महत्वपूर्ण कार्यक्रम

Snow leopard count in state rises to 83

TRIBUNE NEWS SERVICE

SHIMLA, OCTOBER 3

The population of snow leopards in Himachal Pradesh has increased significantly over the past four years. As per a study conducted by the Himachal Pradesh Wildlife Wing in collaboration with the Nature Conservation Foundation (NCF), Bengaluru, the count of snow leopards rose to 83 in 2025 from 51 in 2021.

"The study also documented the presence of two new wild species in Himachal — woolly flying squirrel and Pallas's cat," said Amitabh Gautam, Principal Chief Conservator of Forests (PCCF), Wildlife, while inaugurating the 74th Wildlife Week here yesterday.

The first official sighting of Pallas's cat was recorded in Kinnaur, and the woolly flying squirrel (Eupetaurus cinereus) was spotted in Lahaul.

The highest density has been recorded in trans-Himalayan regions of Spiti and Pin valleys, upper Kinnaur and Tabo.

The survey, the second after 2021, employed a large-scale camera-trapping exercise across six sites over the 26,000 sq km habitat of snow leopards in the state. The study found that the snow leopard density ranged from 0.16 to 0.53 individuals per 100 sq km. The trans-Himalayan regions of Spiti and Pin valleys, followed by Upper Kinnaur and Tabo, recorded the highest density.

Snow leopards were mostly detected in the protected areas such as the Kibber Wildlife Sanctuary, Great Himalayan National Park, Sechu Tuan Nala Wildlife Sanctuary and the Lippa Asrang Wildlife Sanctuary. Some snow leopards, though, were detected outside the protected areas as well.

The wildlife officials are attributing this increase in the number of snow leopards to a more conducive habitat and better survey methodology as compared to the 2021 study. "Snow leopards showed lesser movement in the second study, which shows the habitat has improved and there is more prey available for them," said Shah Nawaz Bhatt, DFO, Wildlife, Shimla.

Besides, the survey was completed in one year, which also yielded more reliable data. Meanwhile, Gautam said that snow leopards in Himachal were under threat and the Wildlife Wing was playing a key role in their conservation. "Many wild species are on the verge of extinction. The Forest Department, along with the Wildlife Wing, is taking important steps to protect them," he added and urged people to actively participate in wildlife conservation efforts.

शिमला फ्लाइंग फेस्टिवल में महकी रसायन मुक्त उत्पादों की खुशबू

इंडिया न्यूज

चुल्ली तेल और हैंडलूम प्रोडक्ट्स की अधिक बिक्री

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थतिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना (JICA वित्तपोषित)

हिमाचल प्रदेश सम्पूर्ण लक्ष्यः

हिमाचल प्रदेश के चयनित क्षेत्रों में वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं संवर्धन करना, जिससे पर्यावरण एवं सतत सामाजिक.आर्थिक विकास में योगदान मिल सके।

परियोजना कार्यान्वयन क्षेत्रः

यह परियोजना हिमाचल प्रदेश के 7 जिलों बिलासपुर, कांगड़ा, किन्नौर, मंडी, लाहौल-स्पीति, शिमला और कुल्लू के 9 वृतों, 22 वन मंडलों और 72 वन परिक्षेत्रों में कार्यान्वित की जा रही है। यह परियोजना हिमाचल प्रदेश वन विभाग के सौजन्य से गठित ग्राम वन विकास समितियों और जैव विविधता प्रबंधन समितियों के माध्यम से हिमाचल प्रदेश सोसायटी अधिनियम-2006 के तहत पंजीकृत एक स्वायत्त सोसाइटी द्वारा कार्यान्वित की जा रही है, जिसका नाम हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना के रूप में नामित किया गया।

परियोजना की लागत एवं अवधिः

इस परियोजना की कुल लागत 800 करोड़ रुपये है और अवधि 10 वर्ष यानी 2018 से 2028 तक है।

परियोजना का ध्येयः

परियोजना क्षेत्र में वन पारितंत्रों का सुनियोजित कार्य-कलापों द्वारा बेहतर प्रबंधन प्रदान करना, जिससे कि वनों में वृद्धि हो, जैव विविधता का संरक्षण होए समुदायों की आजीविका में सुधार एवं संस्थागत क्षमता का सुदृढ़िकरण हो।

परियोजना के घटकः

1. सतत् वन पारिस्थिति तंत्र प्रबंधन।
2. जैव विविधता संरक्षण।
3. आजीविका सुधार सहयोग।
4. संस्थागत क्षमता सुदृढिकरण।

परियोजना की मुख्य गतिविधियाः

- 460 ग्राम वन विकास समितियां और जैव विविधता प्रबंधन उप समितियों का चयन एवं उनका गठन किया गया।
- 459 सूक्ष्म विकास योजनाएं तैयार की गई।
- 908 स्वयं सहायता समूह गठित किए गएए जिननें से 700 से अधिक स्वयं सहायता समूह पूर्ण रूप से महिला संचालित है।
- परियोजना द्वारा स्वयं सहायता समूहों को अनुदान के रूप में 1-1 लाख रुपये की राशि अपनी आजीविका संवर्धन कार्यों को गति देने के लिए दी गई।
- स्वयं सहायता समूहों द्वारा अपने व्यावसाय के सुनियोजित तरीके से चलाने के लिए परियोजना के सौजन्य से 885 व्यावसायिक योजनाएं तैयार की गई।
- ग्राम वन विकास समितियों और जैव विविधता प्रबंधन समितियों के लिए परियोजना जागरुकता कार्यशालाएं, कौशल आधारित प्रशिक्षण समय-समय परआयोजित किए जाते हैं। अब तक 880 से अधिक स्वयं सहायता समूहों को कौशल आधारित गतिविधियों में प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
- ग्राम वन विकास समितियों और जैव विविधता प्रबंधन समितियों के माध्यम से परियोजना द्वारा सहभागी वन प्रबंधन एवं विभागीय स्तर पर अब तक 8300 हेक्टेयर क्षेत्र में पौधरोपण किया गया।
- मुख्यमंत्री वन विस्तार योजना के अंतर्गत प्रदेश में 124 हेक्टेयर क्षेत्र में पौधरोपण किया गया।
- पौधशाला विकास योजना के तहत परियोजना द्वारा 72 विभागीय पौधशालाओं का सुदृढ़ीकरण किया गया है।
- चौपाल वन मंडल में परियोजना द्वारा अत्याधुनिक तकनीक से लैस नर्सरी संचालित की गई है, जिससे पौधरोपण एवं संरक्षण का कार्य वैज्ञानिक यांत्रिक तकनीक से किया जा रहा है।
- जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ द्वारा राज्य के परियोजना क्षेत्रों में औषधीय पौधों की व्यावसायिक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- स्पीति के अतिदुर्गम क्षेत्र देमुल गांव को जौ की थ्रेशिंग के लिए पायलट आधार पर डीजल संचालित दो थ्रेशिंग मशीनें वितरित की गई।

JICA

HP JICA FORESTRY PROJECT

मुख्य परियोजना निदेशक
(जाइका वानिकी परियोजना)

परियोजना कार्यालयः मुख्य परियोजना निदेशक, टुटू शिमला -11 हिमाचल प्रदेश । ईमेल : cpdjica2018hpfd@gmail.com । फोन नंबर : 0177-2838217 । वेबसाइट : https://jicahpforestryproject.com

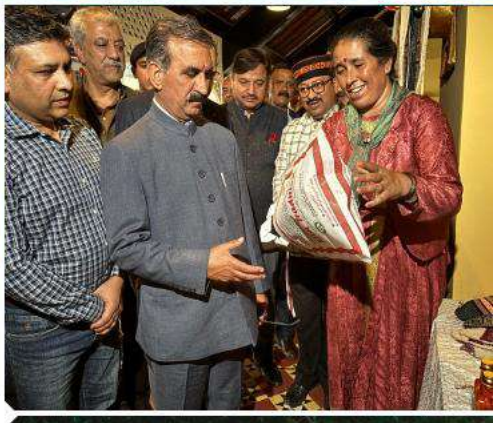

विस्तृत जानकारी के लिए संपर्क करें

मुख्य परियोजना निदेशक, जाइका वानिकी परियोजना

नजदीक मिल्कफैड निगम, टुटू शिमला-11 हिमाचल प्रदेश

दूरभाषः 0177.2837217 2837317/2838217

email: cpdjica2018hpfd@gmail.com https://jicahpforestryproject.com

अतिरिक्त परियोजना निदेशक अनुश्रवण एवं मूल्यांकन इकाई

जाइका वानिकी परियोजना, कुल्लू। दूरभाषः 01902-226636, ई0 मेलः pdjicakullu@gmail.com